

HAJ VA UMRAH KA MUKHTASAR TARIQA (Hindi)



हज व उम्रह का मुक़्तसर तरीक़ा



مكتبة المدينة
(دعوت اسلامی)



اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

किताब पढ़ने की दुआ

अज : शैखे तरीकत, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा
मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी र-जवी دانت بركاتهم العاليه

दीनी किताब या इस्लामी सबक पढ़ने से पहले जैल में दी हुई दुआ पढ़
लीजिये إِنَّ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَاُنشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا دَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ

तरजमा : ऐ अल्लाह ! हम पर इल्म व हिकमत के दरवाजे खोल दे और हम पर
अपनी रहमत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ-ज़मत और बुजुर्गी वाले । (المستطرف ج ١، ص ٤٠، مدار الفكر بيروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

तालिबे गुमे मदीना
व बकीअ
व मरिफ़रत



13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

हज व उम्रह का मुख्तसर तरीका

येह रिसाला (हज व उम्रह का मुख्तसर तरीका)

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी) ने उर्दू ज़बान में पेश किया है ।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को हिन्दी रस्मुल खत में
तरतीब दे कर पेश किया है, और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ करवाया है । इस में अगर
किसी जगह कमी बेशी पाएँ तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअए मक्तूब, ई-मैडल)
मुत्तलअ फ़रमा कर सवाब कमाइये ।

राबिता : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,

तीन दरवाज़ा, अहमदआबाद, गुजरात ।

MO. 09374031409 E-mail : maktabahind@gmail.com

www.dawateislami.net

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
 أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ط

उम्रे का मुख्तसर तरीका

उम्रे की फ़ज़ीलत

मदीने के ताजदार, ब अताए परवर दगार ए़ुओुओुु दो आलम के मालिको मुख्तार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इशादे खुश गवार है :
 “उम्रह से उम्रह तक उन गुनाहों का कफ़ारा है जो दरमियान में हुए और हज्जे मबरूर का सवाब जन्नत ही है।”

(صحيح البخارى ج 1 ص 586 حديث 1443)

तवाफ़ का तरीका

तवाफ़ शुरूअ करने से कब्ल मर्द इज़्तिबाअ कर लें या'नी चादर सीधे हाथ की बग़ल के नीचे से निकाल कर उस के दोनों पल्ले उल्टे कन्धे पर इस तरह डाल लें कि सीधा कन्धा खुला रहे। अब परवाना वार शम्ू का 'बा के गिर्द तवाफ़ के लिये तय्यार हो जाइये। ह-जरे अस्वद की ऐन सीध में अब इज़्तिबाई हालत में का'बे की तरफ़ मुंह कर के इस तरह खड़े हो जाइये कि पूरा “ह-जरे अस्वद” आप के सीधे हाथ की तरफ़ हो जाए, अब बिगैर हाथ उठाए इस तरह तवाफ़ की निय्यत कीजिये :

اللَّهُمَّ إِنِّي أُرِيدُ طَوَافَ بَيْتِكَ
الْحَرَامِ فَيَسِّرْهُ لِي وَتَقَبَّلْهُ
مِنِّْي ط

ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मैं तेरे मोहतरम घर का तवाफ़ करने का इरादा करता हूँ, तू इसे मेरे लिये आसान फ़रमा दे और मेरी जानिब से इसे क़बूल फ़रमा। (बहारे शरीअत, जि. 1, हिस्सा : 6, स. 1096, फ़तावार-जविय्या मुखर्रजा, जि. 10, स. 739)

(हर जगह या'नी नमाज़, रोज़ा, ए'तिकाफ़, तवाफ़ वगैरा में इस बात का खयाल रखिये कि अ-रबी ज़बान में निय्यत उसी वक़्त कार आमद होगी जब कि उस के मा'ना मा'लूम हों वरना निय्यत उर्दू में बल्कि अपनी मा-दरी ज़बान में भी हो सकती है और हर सूरात में **दिल में निय्यत होना शर्त है** और ज़बान से न कहें तो दिल ही में निय्यत होना काफ़ी है हां ज़बान से कह लेना **अफ़ज़ल** है) निय्यत कर लेने के बा'द **का'बा शरीफ़** ही की तरफ़ मुंह किये सीधे हाथ की जानिब थोड़ा सा स-रकिये और ह-जरे अस्वद के ऐन सामने खड़े हो जाइये। अब दोनों हाथ इस तरह उठाइये कि हथेलियां ह-जरे अस्वद की तरफ़ रहें और पढ़िये :

بِسْمِ اللَّهِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ وَاللَّهُ أَكْبَرُ
وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى رَسُولِ
اللَّهِ ط

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नाम से और तमाम ख़ुबियां अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बहुत बड़ा है और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर दुरूदो सलाम हों।

अब अगर मुम्किन हो तो **ह-जरे अस्वद शरीफ़** पर दोनों हथेलियां और उन के बीच में मुंह रख कर यूं बोसा दीजिये कि आवाज़ पैदा न हो। तीन बार ऐसा ही कीजिये। इस बात का **खयाल रखिये** कि लोगों को आप के धक्के न लगें कि येह कुव्वत का मुज़ा-हरा करने का मौक़अ नहीं अज़िज़ी और मिस्कीनी के इज़हार की जगह है। **बोसाए ह-जरे अस्वद सुन्नत है और मुसलमान को ईज़ा देना हराम और**

फिर यहां अगर एक नेकी लाख नेकियों के बराबर है तो एक गुनाह भी लाख गुनाह के बराबर है। हुजूम के सबब अगर बोसा मुयस्सर न आ सके तो हाथ से ह-जरे अस्वद को छू कर उसे चूम लीजिये, यह भी न बन पड़े तो हाथों का इशारा कर के अपने हाथों को चूम लीजिये। ह-जरे अस्वद को बोसा देने या हाथ से छू कर चूमने या हाथों का इशारा कर के उन्हें चूम लेने को “इस्तिलाम” कहते हैं। (अब लब्बैक कहना मौकूफ फरमा दीजिये) अब का'बा शरीफ की तरफ ही चेहरा किये हुए सीधे हाथ की तरफ थोड़ा सा स-रकिये जब ह-जरे अस्वद आप के चेहरे के सामने न रहे (और यह अदना सी ह-र-कत में हो जाएगा) तो फौरन इस तरह सीधे हो जाइये कि खानए का'बा आप के उल्टे हाथ की तरफ रहे, इस तरह चलिये कि किसी को आप का धक्का न लगे।

मर्द इब्तिदाई तीन फेरों में रमल करते चलें या'नी जल्द जल्द नज़्दीक क़दम रखते, शाने हिलाते चलें। बा'ज लोग कूदते और दौड़ते हुए जाते हैं, यह सुन्नत नहीं है। जहां जहां भीड़ ज़ियादा हो और रमल में अपने आप को या दूसरे लोगों को तक्लीफ़ होती हो तो उतनी देर तक रमल तर्क कर दीजिये मगर रमल की खातिर रुकिये नहीं, त्वाफ़ में मशगूल रहिये। फिर जूं ही मौक़अ मिले, उतनी देर तक के लिये रमल के साथ त्वाफ़ कीजिये।

त्वाफ़ में जिस क़दर खानए का'बा से क़रीब रहें यह बेहतर है मगर इतने ज़ियादा क़रीब भी न हो जाइये कि आप का कपड़ा या जिस्म दीवारे का'बा से लगे और अगर नज़्दीकी में हुजूम के सबब रमल न हो सके तो अब दूरी अफ़ज़ल है। (बहारे शरीअत, जि. 1, हिस्सा : 6, स. 1096, 1097) पहले चक्कर में चलते चलते दुरूद शरीफ़ या दुआएं पढ़ते रहिये।

रुक्ने यमानी तक पहुंचने तक दुरूद या दुआएं ख़त्म कर दीजिये। अब अगर भीड़ की वजह से अपनी या दूसरों की ईज़ा का अन्देशा न हो तो रुक्ने यमानी को दोनों हाथों से या सीधे हाथ से

तबरुकन छूएं, सिर्फ उल्टे हाथ से न छूएं। मौक़अ मुयस्सर आए तो रुकने यमानी को बोसा भी दे लेना चाहिये मगर येह एहतियात ज़रूरी है कि कदम और सीना का 'बाए मुशर्रफ़ा की तरफ़ न हों, अगर चूमने या छूने का मौक़अ न मिले तो यहां हाथों को चूमना सुन्नत नहीं है।

अब का 'बाए मुशर्रफ़ा के तीन कोनों का तवाफ़ पूरा कर के आप चौथे कोने "रुकने अस्वद" की तरफ़ बढ़ रहे हैं, "रुकने यमानी" और रुकने अस्वद की दरमियानी दीवार को "मुस्तजाब" कहते हैं, यहां दुआ पर आमीन कहने के लिये सत्तर हजार फिरिश्ते मुक़रर हैं। आप जो चाहें अपनी ज़बान में अपने लिये और तमाम मुसलमानों के लिये दुआ मांगिये या सब की निय्यत से और मुझ गुनहगार सगे मदीना عَنْ की भी निय्यत शामिल कर के एक मरतबा दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये, नीज़ येह कुरआनी दुआ भी पढ़ लीजिये :

رَبِّاَ اِتِّاَ فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي

الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ۝

(प २, البقرة: २०१)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ रब हमारे ! हमें दुन्या में भलाई दे और हमें आखिरत में भलाई दे और हमें अज़ाबे दोजख़ से बचा।

ऐ लीजिये ! आप ह-जरे अस्वद के करीब आ पहुंचे यहां आप का एक चक्कर पूरा हुवा। लोग यहां एक दूसरे की देखा देखी दूर ही दूर से हाथ लहराते हुए गुज़र रहे होते हैं ऐसा करना हरगिज़ सुन्नत नहीं, आप हस्बे साबिक़ एहतियात के साथ रू ब किब्ला ह-जरे अस्वद की तरफ़ मुंह कर लीजिये। अब निय्यत करने की ज़रूरत नहीं कि वोह तो इब्तिदाअन हो चुकी, अब दूसरा चक्कर शुरू करने के लिये पहले ही की तरह दोनों हाथ कानों तक उठा कर येह दुआ :

بِسْمِ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى رَسُوْلِ اللّٰهِ ۝ इस्तिलाम कीजिये। या'नी मौक़अ हो तो ह-जरे अस्वद को बोसा दीजिये वरना उसी तरह हाथ से इशारा कर के उसे चूम लीजिये पहले ही

की तरह का'बा शरीफ की तरफ मुंह कर के थोड़ा सा स-रकिये । जब ह-जरे अस्वद सामने न रहे तो फौरन उसी तरह का 'बाए मुशर्रफा को उल्टे हाथ की तरफ लिये तवाफ में मशगूल हो जाइये और दुरूद शरीफ या दुआएं पढ़ते हुए दूसरा चक्कर शुरू कीजिये ।

रुकने यमानी पर पहुंचने से पहले पहले दुआएं या दुरूदे पाक खत्म कर दीजिये । अब मौकअ मिले तो पहले की तरह बोसा ले कर या फिर उसी तरह छू कर दुरूद शरीफ पढ़ कर ह-जरे अस्वद की तरफ बढ़ते हुए हस्बे साबिक दुआएं कुरआनी पढ़िये :

رَبِّنَا إِنَّا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةٌ وَفِي

الْآخِرَةِ حَسَنَةٌ وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ۝

(پ، البقرة: ۲۰۱)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : ऐ रब हमारे ! हमें दुन्या में भलाई दे और हमें आखिरत में भलाई दे और हमें अज़ाबे दोज़ख से बचा ।

ऐ लीजिये ! आप फिर ह-जरे अस्वद के करीब आ पहुंचे । अब आप का दूसरा चक्कर भी पूरा हो गया । फिर हस्बे साबिक दोनों हाथ कानों तक उठा कर यह दुआ :

بِسْمِ اللَّهِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ وَاللَّهُ أَكْبَرُ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ ۝

ह-जरे अस्वद का इस्तिलाम कीजिये और पहले ही की तरह तीसरा चक्कर शुरू कीजिये और दुरूद शरीफ या दुआएं पढ़ते रहिये ।

इसी अन्दाज़ में सातों चक्कर पूरे कीजिये । सातवें चक्कर के बा'द ह-जरे अस्वद पर पहुंच कर आप के सात फेरे मुकम्मल हो गए मगर फिर आठवीं बार हस्बे साबिक दोनों हाथ कानों तक उठा कर यह

दुआ : بِسْمِ اللَّهِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ وَاللَّهُ أَكْبَرُ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ ۝

पढ़ कर इस्तिलाम कीजिये और यह हमेशा याद रखिये कि जब भी तवाफ करें उस में फेरे सात होते हैं और इस्तिलाम आठ ।

मक़ामे इब्राहीम

अब आप अपना सीधा कन्धा ढांप लीजिये और मक़ामे इब्राहीम पर आ कर येह आयते मुक़द्दसा पढ़िये :

وَأَتَّخِذُوا مِنْ مَّقَامِ إِبْرَاهِيمَ مُصَلًّى ط

(प १, البقرة: १२५)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : और इब्राहीम (عليه السلام) के खड़े होने की जगह को नमाज़ का मक़ाम बनाओ ।

नमाज़े तवाफ़

अब मक़ामे इब्राहीम (عليه السلام) के करीब जगह मिले तो बेहतर वरना मस्जिदे हुराम में जहां भी जगह मिले अगर वक़्ते मक्रूह न हो तो दो रक़अत नमाज़े तवाफ़ अदा कीजिये, पहली रक़अत में सूरए फ़ातिहा के बा'द और दूसरी में قُلْ هُوَ اللهُ और दूसरी में قُلْ يَا أَيُّهَا الْكَافِرُونَ के बा'द नमाज़ वाजिब है और कोई मजबूरी न हो तो तवाफ़ के बा'द फ़ौरन पढ़ना सुन्नत है । अक्सर लोग कन्धा खुला रख कर नमाज़ पढ़ते हैं येह मक्रूहे तहरीमी है, ऐसी नमाज़ का दोबारा लौटाना वाजिब है । इज्तिबाअ या'नी कन्धा खुला रखना सिर्फ़ उस तवाफ़ के सातों फेरों में है जिस के बा'द सअय होती है । अगर वक़्ते मक्रूह दाख़िल हो गया हो तो बा'द में पढ़ लीजिये और याद रखिये इस नमाज़ का पढ़ना लाज़िमी है । नमाज़ पढ़ कर मस्नून दुआएं पढ़ लीजिये ।

अब मुल्लतज़म पर आइये.....!

नमाज़ व दुआ से फ़रिग़ हो कर मुल्लतज़म से लिपट जाइये । दरवाज़ए का 'बा और ह-जरे अस्वद के दरमियानी हिस्से को मुल्लतज़म कहते हैं, इस में दरवाज़ए का 'बा शामिल नहीं । मुल्लतज़म से कभी सीना लगाइये तो कभी पेट, इस पर कभी दायां रुख़्सार (या'नी गाल) तो कभी बायां रुख़्सार रखिये और दोनों हाथ सर से ऊंचे कर के दीवारे मुक़द्दस पर फ़ैलाइये या सीधा हाथ दरवाज़ए का 'बा की तरफ़ और उल्टा हाथ

ह-जरे अस्वद की तरफ फैलाइये। खूब आंसू बहाइये और निहायत ही आजिजी के साथ गिड़गिड़ा कर अपने पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ से अपने लिये और तमाम उम्मत के लिये अपनी ज़बान में दुआ मांगिये कि मक़ामे क़बूल है और दुरूद शरीफ़ या मस्नून दुआएं भी पढ़िये :

एक अहम मस्अला

मुल्तज़म के पास नमाज़ तवाफ़ के बा'द आना उस तवाफ़ में है जिस के बा'द सअय है और जिस के बा'द सअय न हो म-सलन तवाफ़े नफ़ल या तवाफुज़्जियारह (जब कि हज की सअय से पहले फ़ारिग़ हो चुके हों) उस में नमाज़ से पहले मुल्तज़म से लिपटिये। फिर मक़ामे इब्राहीम के पास जा कर दो रक्अत नमाज़ अदा कीजिये।

(المسلك المتقسط ص ۱۳۸)

अब ज़मज़म पर आइये !

आबे ज़मज़म पर आ कर और क़िब्ला रू खड़े खड़े आबे ज़मज़म पर आ कर और क़िब्ला रू खड़े खड़े بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ पढ़ कर तीन सांस में खूब पेट भर कर पियें, पीने के बा'द الْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ कहें, हर बार का'बए मुशर्रफ़ा की तरफ़ निगाह उठा कर देख लें, कुछ पानी जिस्म पर भी डालें, मुंह सर और जिस्म पर उस से मस्ह भी करें मगर येह एहतियात रखें कि कोई क़तरा ज़मीन पर न गिरे।

सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने जीशान है : “ज़मज़म जिस मक़सद के लिये पिया जाएगा वोह मक़सद हासिल हो जाएगा।”

(سُنَنُ ابْنِ مَاجَه ج ۳ ص ۲۹۰ حدیث ۳۰۶۲)

येह ज़म ज़म उस लिये है जिस लिये इस को पिये कोई

इसी ज़म ज़म में जन्नत है, इसी ज़म ज़म में कौसर है

(ज़ौके ना'त)

आबे ज़मज़म पी कर येह दुआ पढ़ें

اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ عِلْمًا تَأْفِعًا وَ
رِزْقًا وَاسِعًا وَعَمَلًا مُتَقَبَّلًا وَشِفَاءً
مِنْ كُلِّ دَاءٍ ط

ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मैं तुझ से इल्मे
नाफे अ और कुशादा रिज़क और
अ-मले मक़बूल और हर बीमारी से शिफ़ा
का सुवाल करता हूं ।

(बहारे शरीअत, जि. 1, हिस्सा : 6, स. 1105)

सफ़ा व मर्वह की सअ्य

अब अगर कोई मजबूरी या थकन वगैरा न हो तो अभी
वरना आराम कर के सफ़ा व मर्वह में सअ्य करने के लिये तय्यार
हो जाइये । याद रहे कि सअ्य में इज़ितबाअ या'नी कन्धा खुला
रखना सुन्नत नहीं है । अब सअ्य के लिये ह-जरे अस्वद का
पहले ही की तरह दोनों हाथ कानों तक उठा कर येह दुआ :

بِسْمِ اللَّهِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ وَاللَّهُ أَكْبَرُ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ
इस्तिलाम कीजिये ।

अब बाबुसफ़ा पर आइये ! “कोहे सफ़ा” चूँकि “मस्जिदे
हराम” से बाहर वाक़ेअ है और हमेशा मस्जिद से बाहर निकलते वक़्त
उल्टा पाउं निकालना सुन्नत है, लिहाज़ा यहां भी पहले उल्टा पाउं निकालिये
और हस्बे मा'मूल मस्जिद से बाहर आने की दुआ पढ़िये । दुआ येह है :

اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ
وَرَحْمَتِكَ ط

ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मैं तुझ से तेरे
फ़ज़ल और तेरी रहमत का सुवाल
करता हूं ।

अब दुरूदो सलाम पढ़ते हुए सफ़ा पर इतना चढ़िये कि का'बए
मुअज़्ज़मा नज़र आ जाए और येह बात यहां मा'मूली सा चढ़ते ही
हासिल हो जाती है, या'नी अगर दीवारें वगैरा दरमियान में न होतीं तो
का'बए मुअज़्ज़मा यहां से नज़र आता । इस से ज़ियादा चढ़ने की हाज़त
नहीं । अब मस्नून दुआएं या दुरूदे पाक पढ़िये ।

ग़लत अन्दाज़

ना वाकिफ़ियत के सबब काफ़ी लोग का 'बा शरीफ़ की तरफ़ हथेलियां करते हैं, बा'ज हाथ लहरा रहे होते हैं तो बा'ज तीन बार कानों तक हाथ उठा कर छोड़ देते हैं, ये सब ग़लत तरीके हैं। हस्बे मा'मूल दुआ की तरह हाथ कन्धों तक उठा कर का 'बाए मुअज़्जमा की तरफ़ मुंह किये इतनी देर तक दुआ मांगनी चाहिये जितनी देर में सू-रतुल ब-करह की पच्चीस आयतों की तिलावत की जाए, ख़ूब गिड़गिड़ा कर और रो रो कर दुआ मांगिये कि ये क़बूलियत का मक़ाम है। अपने लिये और तमाम जिन्न व इन्स मुस्लिमीन की ख़ैर व भलाई के लिये और एहसाने अज़ीम होगा कि मुझ गुनहगार सगे मदीना की बे हिसाब मग़िफ़रत के लिये भी दुआ मांगिये। नीज़ दुरूद शरीफ़ पढ़ कर ये दुआ पढ़िये :

कोहे सफ़ा की दुआ

اللَّهُ أَكْبَرُ اللَّهُ أَكْبَرُ اللَّهُ أَكْبَرُ وَلِلَّهِ الْحَمْدُ ط الْحَمْدُ لِلَّهِ عَلَى مَا هَدَانَا
 الْحَمْدُ لِلَّهِ عَلَى مَا أَوْلَانَا ط الْحَمْدُ لِلَّهِ عَلَى مَا أَلْهَمَنَا ط الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي هَدَانَا
 لِهَذَا وَمَا كُنَّا لِنَهْتَدِيَ لَوْلَا أَنْ هَدَانَا اللَّهُ ط لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ ط

1 : रमिये जमरात, वुकूफ़े अ-रफ़ात वगैरा के लिये जिस तरह नियत शर्त नहीं इसी तरह सअ्य में भी शर्त नहीं बिगैर नियत के भी अगर किसी ने सअ्य की तो हो जाएगी मगर सअ्य में नियत कर लेना मुस्तहब है कि बिगैर नियत की जाने वाली सअ्य पर सवाब नहीं मिलेगा। उमूमन उर्दू में शाएअ होने वाली हज की किताबों में इब्तिदाअन नियते सअ्य लिखी हुई होती है ये ठीक नहीं, सहीह तरीका येही है कि अगर नियत करना भी है तो पहले दुआ पढ़ लीजिये और सफ़ा से उतरना शुरू करने से पहले नियत कीजिये। लिहाज़ा इस किताब में सफ़ा की दुआ के बा'द नियत का तरीका दिया हुआ है।

لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ يُحْيِي وَيُمِيتُ وَهُوَ حَيٌّ لَا يَمُوتُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ وَهُوَ عَلَى
 كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ط لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ وَصَدَقَ وَعْدُهُ وَنَصَرَ عَبْدَهُ وَأَعَزَّهُ
 جُنْدَهُ وَهَزَمَ الْأَحْزَابَ وَحْدَهُ ط لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَلَا نَعْبُدُ إِلَّا إِيَّاهُ مُخْلِصِينَ لَهُ
 الدِّينَ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُونَ ط اللَّهُمَّ إِنَّكَ قُلْتَ وَقَوْلِكَ الْحَقُّ أَدْعُونِي أَسْتَجِبْ
 لَكُمْ وَإِنَّكَ لَا تَخْلِفُ الْبُعْدَ ط اللَّهُمَّ كَمَا هَدَيْتَنِي لِلْإِسْلَامِ أَسْأَلُكَ أَنْ لَا
 تَنْزِعَهُ مِنِّي حَتَّى تُوَفَّقَانِي وَأَنَا مُسْلِمٌ ط سُبْحَانَ اللَّهِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ وَلَا إِلَهَ إِلَّا
 اللَّهُ وَاللَّهُ أَكْبَرُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيمِ ط اللَّهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ
 عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِهِ وَأَصْحَابِهِ وَأَزْوَاجِهِ وَذُرِّيَّتِهِ وَأَتْبَاعِهِ إِلَى يَوْمِ
 الدِّينِ ط اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي وَلِوَالِدَيَّ وَلِجَمِيعِ الْمُسْلِمِينَ وَالْمُسْلِمَاتِ وَسَلَامٌ عَلَى
 الْمُرْسَلِينَ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ط

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ सब से बड़ा है, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ सब से बड़ा है,
 अल्लाह عَزَّوَجَلَّ सब से बड़ा है और वोही ता'रीफ़ का मुस्तहिक है जिस
 अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने हमें हिदायत दी वोही हम्द का मुस्तहिक है और जिस ने हमें
 ने'मत बख़्शी वोही खुदा हम्द के काबिल है और उसी की ज़ाते पाक मुस्तहिके
 हम्द है जिस ने हमें भलाई की राह समझाई, तमाम ता'रीफें उसी खुदा को जैब
 देती हैं जिस ने हमें येह हिदायत नसीब फ़रमाई अगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें
 हिदायत न देता तो हम कभी हिदायत न पा सकते। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही तन्हा
 मा'बूद है उस का कोई शरीक नहीं उसी की बादशाहत है, वोही हमा किस्म
 की हम्द का मुस्तहिक है, जिन्दगी और मौत उसी के हाथ में है, वोह ऐसा जिन्दा

है कि उस के लिये मौत नहीं, खैर व भलाई उसी के कब्जे में है और वोह हर शै पर कादिर है, **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** यक्ता व यगाना के सिवा कोई मा'बूद नहीं और उस का वा'दा सच्चा है और उस ने अपने बन्दे की मदद फ़रमाई और उस के लश्कर को सुख-रू किया और उसी ने तन्हा बातिल के सारे लश्करो को पस्पा किया। **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** के सिवा कोई मा'बूद नहीं और हम उस के सिवा किसी की इबादत नहीं करते, ख़ालिस उसी की इबादत करते हैं चाहे येह बात काफ़िरो को गिरां ही क्यूं न गुज़रे। ऐ **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** ! तेरा फ़रमान है और तेरा फ़रमान हक़ है कि मुझे से दुआ करो मैं क़बूल करूंगा और तेरा वा'दा टलता नहीं तो ऐ **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** ! जिस तरह तू ने मुझे इस्लाम की दौलत अता फ़रमाई, अब मेरा सुवाल है कि मुझे से येह दौलत वापस न लेना, मुझे मरते दम तक मुसलमान ही रखना। **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** की जात पाक है और हम्द की मुस्तहिक़ भी खुदा ही की जात है, **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** के सिवा कोई मा'बूद नहीं और **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** ही बड़ा है और न कोई ताक़त और न कोई कुव्वत मगर **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** बुजुर्ग व बरतर की मदद से। ऐ **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** ! हमारे आका व मौला हज़रते मुहम्मद **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** पर और आप की औलाद पर और आप के अस्थाब पर और आप की अज़्वाजे मुतहहरात पर और आप की नस्ल और पैरोकारों पर क़ियामत तक दुरूदो सलाम नाज़िल फ़रमा। ऐ **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** ! मुझे, मेरे वालिदैन को और सारे मुसलमान मर्दों और औरतों को मुआफ़ फ़रमा और तमाम पैग़म्बरों पर सलाम पहुंचा और सब ख़ूबियां **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** को जो मालिक सारे जहानों का।

दुआ ख़त्म होने के बा'द हाथ छोड़ दीजिये और दुरूद शरीफ़ पढ़ कर **सअय** की निय्यत अपने दिल में कर लीजिये मगर ज़बान से भी कह लेना बेहतर है। मा'ना ज़ेहन में रखते हुए इस तरह निय्यत कीजिये :

सअय की निघ्यत

اللَّهُمَّ إِنِّي أُرِيدُ السَّعْيَ بَيْنَ
الصَّفَا وَالْمَرْوَةِ سَبْعَةَ أَشْوَاطٍ
لَوْ جُهِكَ الْكَرِيمِ فَيَسِّرْهُ لِي وَ
تَقَبَّلْهُ مِنِّي ط

ऐ अल्लाह **عَزَّ وَجَلَّ** ! मैं तेरी रिज़ा और खुशनूदी की खातिर सफ़ा और मर्वह के दरमियान सअय के सात चक्कर करने का इरादा कर रहा हूँ तू इसे मेरे लिये आसान फ़रमा दे और मेरी तरफ़ से इसे क़बूल फ़रमा ।

(बहारे शरीअत, जि. 1, हिस्सा : 6, स. 1108)

सफ़ा/मर्वह से उतरने की दुआ

اللَّهُمَّ اسْتَعْمِلْنِي بِسُنَّةِ نَبِيِّكَ
صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ
وَتَوَفَّنِي عَلَى مِلَّتِهِ وَأَعِزَّنِي مِنْ
مُضَلَّاتِ الْفِتَنِ بِرَحْمَتِكَ يَا
أَرْحَمَ الرَّاحِمِينَ ط

ऐ अल्लाह **عَزَّ وَجَلَّ** ! तू मुझे अपने प्यारे नबी **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की सुन्नत का ताबेअ बना दे और मुझे उन के दीन पर मौत नसीब फ़रमा और मुझे पनाह दे फ़ितनों की गुमराहियों से अपनी रहमत के साथ, ऐ सब से ज़ियादा रहम करने वाले ।

सफ़ा से अब ज़िक्रो दुरूद में मशगूल दरमियाना चाल चलते हुए जानिबे मर्वह चलिये । जूँ ही पहला सब्ज़ मील आए मर्द दौड़ना शुरूअ कर दें (मगर मुहज्ज़ब तरीके पर न कि बे तहाशा) और सुवार सुवारी को तेज़ कर दें, हां अगर भीड़ ज़ियादा हो तो थोड़ा रुक जाइये जब कि भीड़ कम होने की उम्मीद हो । दौड़ने में येह याद रखिये कि खुद को या किसी दूसरे को ईज़ा न पहुंचे कि

यहां दौड़ना **सुन्नत** है जब कि किसी मुसलमान को ईजा देना **हराम**, इस्लामी बहनें न दौड़ें। अब इस्लामी भाई दौड़ते हुए और इस्लामी बहनें चलते हुए मस्नून दुआएं या दुरूदे पाक पढ़ें।

जब **दूसरा सब्ज़ मील** आए तो आहिस्ता हो जाइये और जानिबे **मर्वह** बढ़े चलिये। **ऐ लीजिये ! मर्वह शरीफ़** आ गया, अवामुन्नास दूर ऊपर तक चढ़े हुए होते हैं, आप उन की नक्ल न कीजिये, फ़क़त आप **मा'मूली ऊंचाई** पर चढ़िये बल्कि उस के करीब ज़मीन पर खड़े होने से भी **मर्वह** पर चढ़ना हो गया, यहां अगर्चे दीवारें वगैरा बन जाने के सबब **का'बा शरीफ़** नज़र नहीं आता मगर **का'बा मुशर्रफ़ा** की तरफ़ मुंह कर के **सफ़ा** की तरह उतनी ही देर तक दुआ मांगिये। अब निर्यत करने की ज़रूरत नहीं कि वोह तो पहले हो चुकी येह एक **फेरा** हुवा।

अब हस्बे साबिक़ दुआ पढ़ते हुए **मर्वह** से जानिबे **सफ़ा** चलिये और हस्बे मा'मूल **मीलैने अख़ज़रैन** के दरमियान **मर्द** दौड़ते हुए और **इस्लामी बहनें** चलते हुए वोही दुआ पढ़ें, अब सफ़ा पर पहुंच कर **दो फेरे** पूरे हुए। इसी तरह **सफ़ा** और **मर्वह** के दरमियान चलते, दौड़ते सातवां फेरा **मर्वह** पर ख़त्म होगा, आप की **सअय** मुकम्मल हुई।

नमाज़े सअय मुस्तहब है

अब हो सके तो **मस्जिदे हराम** में दो रकअत नमाज़ नफ़्ल (अगर मक्क़रूह वक़्त न हो) अदा कर लीजिये कि **मुस्तहब** है, **हमारे प्यारे आका** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने **सअय** के बा'द **मताफ़** के कनारे ह-जरे अस्वद की सीध में दो नफ़्ल अदा फ़रमाए हैं।

हल्क़ या तक्सीर

अब मर्द हल्क़ करें या'नी सर मुंडवा दें या तक्सीर करें या'नी बाल कतरवाएं ।

तक्सीर की ता'रीफ़

तक्सीर या'नी कम अज़ कम चौथाई (¼) सर के बाल उंगली के पौरे बराबर कटवाना । इस में येह एहतियात रखें कि एक पौरे से ज़ियादा कटवाएं ताकि सर के बीच में जो छोटे छोटे बाल होते हैं वोह भी एक पौरे के बराबर कट जाएं । बा'ज लोग कैंची से चन्द बाल काट लिया करते हैं, ह-नफ़िय्यों के लिये येह तरीका बिल्कुल ग़लत है और इस तरह एहराम की पाबन्दियां भी ख़त्म न होंगी ।

इस्लामी बहनों की तक्सीर

इस्लामी बहनों को सर मुंडाना हराम है वोह सिर्फ़ तक्सीर करवाएं । इस का आसान तरीका येह है कि अपनी चुटिया के सिरे को उंगली के एक पौरे से कुछ ज़ियादा काट लें, लेकिन येह एहतियात लाज़िमी है कि कम अज़ कम चौथाई (¼) सर के बाल एक पौरे के बराबर कट जाएं ।

الحمد لله عز وجل مبارك हो कि आप उम्रह शरीफ़ से फ़ारिग़ हो गए ।



हज का मुख़्तसर तरीका

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

बेचैन दिलों के चैन, रहमते दारैन, ताजदारे ह-रमैन, सरवरे कौनैन صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने रहमत निशान है :
“जब जुम्अरात का दिन आता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़िरिश्तों को भेजता है जिन के पास चांदी के काग़ज़ और सोने के क़लम होते हैं, वोह लिखते हैं कौन यौमे जुम्अरात और शबे जुमुआ मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ता है।”

(کنز العمال، ج ۱، ص ۲۵۰، حدیث ۲۱۷۲)

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

हज की फ़ज़ीलत

وَأَتِمُّوا الْحَجَّ وَالْعُمْرَةَ لِلَّهِ ط

(پ ۲، البقرة: ۱۹۶)

तर-ज-माए कन्ज़ुल ईमान : और हज और उम्ह अल्लाह के लिये पूरा करो।

{1} “जिस ने दो फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ हज किया और रफ़स (या'नी फ़ोहूश कलाम) न किया और फ़िस्क न किया तो गुनाह से ऐसा पाक हो कर लौटा जैसे उस दिन कि मां के पेट से पैदा हुवा।”

(صحيح البخارى، كتاب الحج، باب الحج المبرور، الحديث ۱۵۲۱، ج ۱، ص ۵۱۲)

{2} “हाजी अपने घर वालों में से चार सो की शफ़ाअत करेगा और गुनाहों से ऐसा निकल जाएगा जैसे उस दिन कि मां के पेट से पैदा हुवा।”

(مسند البزار، مسند أبي موسى الأشعري رضي الله عنه، الحديث ۳۱۹۶، ج ۸، ص ۱۶۹)

हज की किस्में

हज की तीन किस्में हैं : (1) क़िरान (2) तमत्तोअ (3) इफ़राद

हज्जे क़िरान

येह सब से अफ़ज़ल है, येह हज अदा करने वाला “क़ारिन” कहलाता है। इस में उम्रह और हज का एहराम एक साथ बांधा जाता है मगर उम्रह करने के बा’द क़ारिन “हल्क़” या “क़स्” नहीं करवा सकता बल्कि ब दस्तूर एहराम में रहेगा। दसवीं या ग्यारहवीं या बारहवीं जुल हिज्जा को कुरबानी करने के बा’द “हल्क़” या “क़स्” करवा के एहराम खोल दे।

हज्जे तमत्तोअ

येह हज अदा करने वाला “मु-तमत्तेअ” कहलाता है। पाकिस्तान और हिन्दूस्तान से आने वाले उमूमन तमत्तोअ ही किया करते हैं। इस में आसानी येह है कि इस में उम्रह तो होता ही है लेकिन उम्रह अदा करने के बा’द “हल्क़” या “क़स्” करवा के एहराम खोल दिया जाता है और फिर आठ जुल हिज्जा या इस से क़ब्ल हज का एहराम बांधा जाता है।

हज्जे इफ़राद

इफ़राद करने वाले हाजी को “मुफ़िद” कहते हैं। इस हज में “उम्रह” शामिल नहीं है। इस में सिर्फ़ हज का “एहराम” बांधा जाता है। अहले मक्का और “हिल्ली” या’नी मीक़ात और हुदूदे हरम के दरमियान में रहने वाले बाशिन्दे (म-सलन अहलियाने जद्दा शरीफ़) “हज्जे इफ़राद” करते हैं। (दूसरे मुल्क से आने वाले भी “इफ़राद” कर सकते हैं)

हज्जे किरान की निय्यत

कारिन उम्रह और हज दोनों की एक साथ निय्यत करेगा, चुनान्चे वोह एहराम बांध कर इस तरह निय्यत करे :

اللَّهُمَّ إِنِّي أُرِيدُ الْعُمْرَةَ وَالْحَجَّ
فَيَسِّرْهُمَا لِي وَتَقَبَّلْهُمَا مِنِّي ط
نَوَيْتُ الْعُمْرَةَ وَالْحَجَّ وَأَحْرَمْتُ
بِهِمَا مُخْلِصًا لِلَّهِ تَعَالَى ط

तरजमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मैं उम्रह और हज दोनों का इरादा करता हूं तू इन्हें मेरे लिये आसान कर दे और इन्हें मेरी तरफ से कबूल फरमा, मैं ने उम्रह और हज दोनों की निय्यत की और खालि-सतन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये इन दोनों का एहराम बांधा ।

हज की निय्यत

मुफ़िद भी एहराम बांधने के बा'द इसी तरह निय्यत करे और मु-तमत्तेअ भी आठ जुल हिज्जा या इस से कबूल हज का एहराम बांध कर मुन्दरिजए जैल अल्फ़ाज़ में निय्यत करे :

اللَّهُمَّ إِنِّي أُرِيدُ الْحَجَّ ط فَيَسِّرْهُ
لِي وَتَقَبَّلْهُ مِنِّي ط وَأَعِنِّي
عَلَيْهِ وَبَارِكْ لِي فِيهِ ط نَوَيْتُ
الْحَجَّ وَأَحْرَمْتُ بِهِ لِلَّهِ تَعَالَى ط

तरजमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मैं हज का इरादा करता हूं। इस को तू मेरे लिये आसान कर दे और इसे मुझ से कबूल फरमा और इस में मेरी मदद फरमा और इसे मेरे लिये बा ब-र-कत फरमा, मैं ने हज की निय्यत की और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये इस का एहराम बांधा ।

म-दनी फूल

निय्यत दिल के इरादे को कहते हैं, ज़बान से भी कह लें तो अच्छा है, अ-रबी में निय्यत उसी वक्त कार आमद होगी जब कि

उन के मा'ना समझ आते हों वरना उर्दू में कर लीजिये, हर हाल में दिल में नियत होना शर्त है ।

लब्बैक

ख़्वाह उम्रे की नियत करें या हज की, नियत के बा'द कम अज़ कम एक बार तल्बियह कहना लाज़िमी है और तीन बार कहना अफ़ज़ल, तल्बियह येह है :

لَبَّيْكَ ط اللَّهُمَّ لَبَّيْكَ ط لَبَّيْكَ ط لَأَشْرِيكَ لَكَ لَبَّيْكَ ط إِنَّ الْحَمْدَ

وَالنِّعْمَةَ لَكَ وَالْمُلْكَ ط لَأَشْرِيكَ لَكَ ط

आठ जुल हिज्जतिल हुराम, मिना को रवानगी

★ मिना, अ-रफ़ात, मुज़दलिफ़ा वग़ैरा का सफ़र अगर हो सके तो पैदल ही तै करें कि जब तक मक्का शरीफ़ पलटेंगे हर हर क़दम पर सात सात करोड़ नेकियां मिलेंगी । وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ

★ रास्ते भर लब्बैक और ज़िक्रो दुरूद की ख़ूब कसरत कीजिये । जूं ही मिना शरीफ़ नज़र आए दुरूद शरीफ़ पढ़ कर येह दुआ पढ़िये :

★ اللَّهُمَّ هَذَا مِنِّي فَاْمُنَّنْ عَلَيَّ بِمَا مَنَنْتَ بِهِ عَلَيَّ اَوْلِيَايَكَ ط
मिना शरीफ़ में अदा करनी हैं क्यूं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे महबूब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने ऐसा ही किया है ।

दुआए शबे अ-रफ़ा

سُبْحَانَ الَّذِي فِي السَّمَاءِ عَرْشُهُ سُبْحَانَ الَّذِي فِي الْأَرْضِ مَوْطِنُهُ سُبْحَانَ الَّذِي

فِي الْبَحْرِ سَبِيْلُهُ سُبْحَانَ الَّذِي فِي النَّارِ سُلْطَانُهُ سُبْحَانَ الَّذِي فِي الْجَنَّةِ رَحْمَتُهُ
 سُبْحَانَ الَّذِي فِي الْقَبْرِ قَضَائُهُ سُبْحَانَ الَّذِي فِي الْهَوَاءِ رُوحُهُ سُبْحَانَ الَّذِي رَفَعَ
 السَّمَاءَ سُبْحَانَ الَّذِي وَضَعَ الْأَرْضَ سُبْحَانَ الَّذِي لَامَلَجًا وَلَا مُنْجَأَ مِنْهُ إِلَّا إِلَهُهُ
 (अव्वल आखिर एक एक बार दुरूद शरीफ पढ़ लीजिये)

नव जुल हिज्जतिल ह्राम अ-रफ़ात को रवानगी

नव जुल हिज्जा को नमाज़े फ़ज़्र मुस्तहब वक़्त में अदा कर के लब्बैक और जि़क्रो दुआ में मशगूल रहिये । यहां तक कि आपताब कोहे सबीर पर कि मस्जिदे ख़ैफ़ के सामने है चमके अब धड़क्ते हुए दिल के साथ जानिबे अ-रफ़ात शरीफ़ चलिये । नीज़ मिना शरीफ़ से निकल कर एक बार येह दुआ भी पढ़ लीजिये ।

राहे अ-रफ़ात की दुआ

اللَّهُمَّ اجْعَلْهَا خَيْرَ غُدُوَّةٍ غَدَوْتَهَا قَطُّ وَقَرِّبْهَا مِنْ رِضْوَانِكَ وَأَبْعِدْهَا مِنْ
 سَخَطِكَ وَاللَّهُمَّ إِلَيْكَ تَوَجَّهْتُ وَعَلَيْكَ تَوَكَّلْتُ وَلِوَجْهِكَ الْكَرِيمِ أَرَدْتُ
 فَاجْعَلْ ذَنْبِي مَغْفُورًا وَحَاجَتِي مُبْرُورًا وَأَرْحَمَنِي وَلَا تَخَيِّبْنِي وَبَارِكْ لِي فِي
 سَفَرِي وَأَقْضِ بِعَرَافَاتٍ حَاجَتِي إِنَّكَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ
 (अव्वल आखिर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये)

अ-रफ़ात शरीफ़ में वक़्ते ज़ोहर में ज़ोहर व अस्स मिला कर पढ़ी जाती है मगर इस की बा'ज़ शराइत हैं । आप अपने अपने ख़ैमों में ज़ोहर के वक़्त में ज़ोहर और अस्स के वक़्त में अस्स की नमाज़ बा जमाअत अदा कीजिये ।

अ-रफ़ात शरीफ़ की दुआएं

★ दो पहर के वक़्त मौक़िफ़ (या'नी ठहरने की जगह) में मुन्दरिजए ज़ैल कलिमए तौहीद, सूरए इख़लास शरीफ़ और फिर इस के बा'द दिया हुवा दुरूद शरीफ़, येह तीनों सो बार पढ़ने वाले की ब हुक्मे हदीस बख़्शिश कर दी जाती है नीज़ अगर वोह तमाम अ-रफ़ात शरीफ़ वालों की सिफ़ारिश कर दे तो वोह भी क़बूल कर ली जाए।

(1) येह कलिमए तौहीद 100 बार पढ़िये :

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ ط لَهُ الْمُلْكُ وَكَهُ الْحَمْدُ يُحْيِي وَيُمِيتُ
وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ

(ब) सूरए इख़लास शरीफ़ 100 बार। (ज) येह दुरूद शरीफ़ 100 बार पढ़िये :

اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى (سَيِّدِنَا) مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلَى (سَيِّدِنَا) إِبْرَاهِيمَ وَعَلَى آلِ
(سَيِّدِنَا) إِبْرَاهِيمَ إِنَّكَ حَمِيدٌ مَّجِيدٌ وَعَلَيْنَا مَعَهُمُ ط

★ “اللَّهُ أَكْبَرُ وَلِلَّهِ الْحَمْدُ” तीन बार फिर कलिमए तौहीद एक बार इस के बा'द येह दुआ तीन बार पढ़िये :

اللَّهُمَّ اهْدِنِي بِالْهُدَى وَنَقِّنِي وَأَعْصِمْنِي بِالتَّقْوَى وَأَغْفِرْ لِي فِي الْآخِرَةِ
وَالْأُولَى ط

मैदाने अ-रफ़ात में खड़े खड़े दुआ मांगना सुन्नत है

याद रहे कि हाजी को नमाज़े मगरिब मैदाने अ-रफ़ात में नहीं पढ़नी बल्कि इशा के वक़्त में, मुज़दलिफ़ा में मगरिब व इशा मिला कर पढ़नी है।

मुज्दलिफ़ा को रवानगी

जब गुरूबे आफ़ताब का यकीन हो जाए तो अ-रफ़ात शरीफ़ से जानिबे मुज्दलिफ़ा शरीफ़ चलिये, रास्ते भर जिक्रो दुरूद और लब्बैक की तक्वार रखिये। कल मैदाने अ-रफ़ात शरीफ़ में हुकूकुल्लाह मुआफ़ हुए यहां हुकूकुल इबाद मुआफ़ फ़रमाने का वा'दा है।

मगरिब व इशा मिला कर पढ़ने का तरीका

यहां आप को एक ही अज़ान और एक ही इक़ामत से दोनों नमाज़ें अदा करनी हैं लिहाज़ा अज़ान व इक़ामत के बा'द पहले मगरिब के तीन फ़र्ज़ अदा कर लीजिये, सलाम फ़ैरते ही फ़ौरन इशा के फ़र्ज़ पढ़िये, फिर मगरिब की सुन्नतें, इस के बा'द इशा की सुन्नतें और वित्र अदा कीजिये।

वुकूफ़े मुज्दलिफ़ा

मुज्दलिफ़ा में रात गुज़ारना सुन्नते मुअक्कदा है मगर इस का वुकूफ़ वाजिब है। वुकूफ़े मुज्दलिफ़ा का वक़्त सुब्हे सादिक़ से ले कर तुलूए आफ़ताब तक है इस के दरमियान अगर एक लम्हा भी मुज्दलिफ़ा में गुज़ार लिया तो वुकूफ़ हो गया, ज़ाहिर है कि जिस ने फ़ज़्र के वक़्त के अन्दर मुज्दलिफ़ा में नमाज़े फ़ज़्र अदा की उस का वुकूफ़ सहीह हो गया।

दसवीं जुल हिज्जा का पहला काम रमी

मुज्दलिफ़ा शरीफ़ से मिना शरीफ़ पहुंच कर सीधे जम्तुल अ-क़बह या'नी “बड़े शैतान” की तरफ़ आइये। आज सिर्फ़ इसी एक (या'नी बड़े शैतान) को कंकरियां मारनी हैं।

हज की कुरबानी

दसवीं जुल हिज्जा को बड़े शैतान को कंकरियां मारने के बा'द

कुरबान गाह तशरीफ लाइये और कुरबानी कीजिये । येह कुरबानी हज के शुक्राने में कारिन और मु-तमत्तेअ पर वाजिब है चाहे वोह फकीर ही क्यूं न हों । ★ मुफ़िद के लिये येह कुरबानी मुस्तहब है, चाहे वोह ग़नी (या'नी मालदार) हो ★ कुरबानी से फ़ारिग़ हो कर हल्क़ या क़स् करवा लीजिये ★ याद रहे हाजी को इन तीन उमूर में तरतीब काइम रखना वाजिब है । (1) सब से पहले "रमी" (2) इस के बा'द "कुरबानी" (3) फिर "हल्क़ या क़स्" ★ मुफ़िद पर कुरबानी वाजिब नहीं लिहाज़ा येह रमी के बा'द हल्क़ या क़स् करवा सकता है ।

ग्यारह और बारह जुल हिज्जा की रमी

ग्यारह और बारह जुल हिज्जा को जोहर के बा'द तीनों शैतानों को कंकरियां मारनी हैं । पहले जम्तुल ऊला (या'नी छोटा शैतान) फिर जम्तुल वुस्ता (या'नी मंझला शैतान) और आख़िर में जम्तुल अ-क़बह (या'नी बड़ा शैतान)

तवाफ़े ज़ियारत

★ तवाफ़े जियारत हज का दूसरा रुक्न है, ★ तवाफ़े ज़ियारत दसवीं जुल हिज्जा को कर लेना अफ़ज़ल है । अगर येह तवाफ़े दसवीं को नहीं कर सके तो ग्यारहवीं और बारहवीं को भी कर सकते हैं मगर बारहवीं का सूरज गुरूब होने से पहले पहले लाज़िमन कर लीजिये ★ तवाफ़े ज़ियारत के चार फ़ैरे करने से पहले बारहवीं का सूरज गुरूब हो गया तो दम वाजिब हो जाएगा ★ हां अगर औरत को हैज़ या निफ़ास आ गया और बारहवीं के बा'द पाक हुई तो अब कर ले इस वजह से ताख़ीर होने पर उस पर दम वाजिब नहीं ।

★ हाइज़ा की निशस्त महफूज़ हो और तवाफ़े ज़ियारत का मस्अला हो तो मुम्किन सूरत में निशस्त मन्सूख़ करवाए और बा'दे

तहारत त्वाफे जियारत करे । अगर निशस्त मन्सूख करवाने में अपनी या हम सफ़रों की दुश्वारी हो तो मजबूरी की सूरत में त्वाफे जियारत कर ले मगर **ब-दना** या'नी गाय या ऊंट की कुरबानी लाजिम आएगी और **तौबा** करना भी ज़रूरी है क्यूं कि जनाबत की हालत में मस्जिद में दाख़िल होना गुनाह है । अगर बारहवीं के गुरूबे आप़ताब तक तहारत कर के त्वाफुजियारह का इआदा करने में काम्याबी हो गई तो **कफ़ारा साक़ित** हो गया और बारहवीं के बा'द अगर पाक होने के बा'द मौक़अ मिल गया और इआदा कर लिया तो **ब-दना साक़ित** हो गया मगर दम देना होगा ।

त्वाफे रुख़सत

जब रुख़सत का इरादा हो उस वक़्त “आफ़ाकी हाजी” पर त्वाफे रुख़सत वाजिब है । न करने वाले पर दम वाजिब होता है । (मीक़ात से बाहर (म-सलन पाक व हिन्द वगैरा) से आने वाला आफ़ाकी हाजी कहलाता है)

“या खुदा हज क़बूल कर” के तेरह हुरूफ़ की

निस्बत से 13 म-दनी फूल

★ जो हाजी गुरूबे आप़ताब से क़बूल मैदाने अ-रफ़ात से निकल गया उस पर दम वाजिब हो गया । अगर दोबारा गुरूबे आप़ताब से पहले पहले हुदूदे अ-रफ़ात में दाख़िल हो गया तो दम साक़ित हो जाएगा ★ दसवीं की सुब्हे सादिक़ ता तुलूए आप़ताब **मुज़्दलिफ़ा** के वुकूफ़ का वक़्त है, चाहे लम्हा भर का वुकूफ़ कर लिया वाजिब अदा हो गया और अगर उस वक़्त के दौरान एक लम्हा भी **मुज़्दलिफ़ा** में न गुज़ारा तो दम वाजिब हो गया । जो कोई सुब्हे सादिक़ से पहले ही **मुज़्दलिफ़ा** से चला गया उस का वाजिब तर्क हो गया, लिहाज़ा उस पर दम वाजिब है । हां औरत, बीमार या ज़ईफ़ या कमज़ोर कि जिन्हें भीड़ के सबब

ईजा पहुंचने का अन्देशा हो अगर ऐसे लोग मजबूरन चले गए तो कुछ नहीं

★ दस जुल हिज्जा की “रमी” का वक्त फ़त्र से ले कर ग्यारहवीं की फ़त्र तक है लेकिन दसवीं की फ़त्र से तुलूए आफ़ताब तक और गुरुबे आफ़ताब से सुब्हे सादिक़ तक मक्रूह है। अगर किसी उज़्र के सबब हो म-सलन चरवाहे ने रात में “रमी” की तो कराहत नहीं

★ दस जुल हिज्जा को अगर मु-तमत्तेअ़ या कारिन में से किसी ने रमी के बा’द कुरबानी से पहले हल्क़ या क़स् करवा लिया तो दम वाजिब हो गया। मुफ़िद “रमी” के बा’द हल्क़ या क़स् करवा सकता है कि उस पर कुरबानी वाजिब नहीं बल्कि मुस्तहब है।

★ हज़्जे तमत्तोअ़ और हज़्जे क़िरान की कुरबानी और हल्क़ या क़स् का हुदूदे हरम में होना वाजिब है। लिहाज़ा अगर येह दोनों हुदूदे हरम से बाहर करेंगे तो तमत्तोअ़ वाले पर “दो दम” और क़िरान वाले पर “चार दम” वाजिब होंगे क्यूं कि क़िरान वाले पर हर जुर्म का डबल कफ़ारा है

★ ग्यारहवीं और बारहवीं की “रमी” का वक्त ज़वाले आफ़ताब (या’नी नमाजे ज़ोहर का वक्त आते ही) शुरूअ़ हो जाता है। बे शुमार लोग सुब्ह ही से “रमी” शुरूअ़ कर देते हैं येह ग़लत है और इस तरह करने से रमी होती ही नहीं। ग्यारहवीं या बारहवीं को ज़वाल से पहले अगर किसी ने “रमी” कर ली और उसी दिन अगर इआदा न किया तो दम वाजिब हो गया

★ ग्यारहवीं और बारहवीं की “रमी” का वक्त ज़वाले आफ़ताब से सुब्हे सादिक़ तक है। मगर बिला उज़्र गुरुबे आफ़ताब के बा’द रमी करना मक्रूह है

★ औरत हो या मर्द, “रमी” के लिये उस वक्त तक किसी को वकील नहीं कर सकते जब तक इस क़दर मरीज़ न हो जाएं कि सुवारी पर भी जम्रे तक न पहुंच सकें अगर इस क़दर बीमार नहीं हैं फिर भी किसी मर्द या औरत ने दूसरे

को वकील कर दिया और खुद “रमी” नहीं की तो दम वाजिब हो जाएगा ★ अगर मिना शरीफ की हुदूद ही मैं तेरहवीं की सुब्हे सादिक् हो गई अब “तेरहवीं की रमी” वाजिब हो गई । अगर “रमी” किये बिगैर चले गए तो दम वाजिब हो गया ★ अगर कोई तवाफ़े ज़ियारत किये बिगैर वतन चला गया तो कफ़ारे से गुज़ारा नहीं होगा क्यूं कि उस के हज का रुकन ही अदा न हुवा । अब लाज़िमी है कि दोबारा मक्कए मुकर्रमा رَادَمَا اللّٰهُ شَرَفًا وَتَعْظِيمًا आए और तवाफ़े ज़ियारत करे । जब तक तवाफ़े ज़ियारत नहीं करेगा बीवी हलाल नहीं होगी, चाहे बरसों गुज़र जाएं ★ वक्ते रुख़सत आफ़ाकी हज्जन को हैज़ आ गया, अब इस पर तवाफ़े रुख़सत वाजिब न रहा, जा सकती है । दम की भी हाज़त नहीं ★ बे वुजू सअय कर सकते हैं मगर बा वुजू मुस्तहब है ★ जितनी बार भी उम्रह करें हर बार एहराम से बाहर होने के लिये हल्क़ या क़स् वाजिब है । अगर सर मुंडा हुवा हो तब भी उस पर उस्तरा फिराना वाजिब है ।

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّد

मदीने की हाज़िरी

मदीने का सफ़र है और मैं नमदीदा नमदीदा

जर्बी अफ़सुर्दा अफ़सुर्दा क़दम लगज़ीदा लगज़ीदा

बाबुल बकीअ पर हाज़िर हों

सरापा अ-दबो होश बने, आंसू बहाते या रोना न आए तो कम अज़ कम रोने जैसी सूरत बनाए बाबुल बकीअ पर हाज़िर हों और “الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُولَ اللّٰهِ” अर्ज़ कर के ज़रा ठहर जाइये ।

गोया सरकारे जी वक्कार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के शाही दरबार में हाज़िरी की इजाज़त मांग रहे हैं। अब “بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ” पढ़ कर अपना सीधा क़दम मस्जिद शरीफ़ में रखिये और हमा तन अदब हो कर दाखिले मस्जिदे न-बवी عَلَى صَاحِبِهَا الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ हों। इस वक़्त जो ता'ज़ीम व अदब फ़र्ज़ है वोह हर मोमिन का दिल जानता है। हाथ, पाउं, आंख, कान, ज़बान, दिल सब ख़याले ग़ैर से पाक कीजिये और रोते हुए आगे बढ़िये। न इर्द गिर्द नज़रें घुमाइये, न ही मस्जिद के नक़शो निगार देखिये, बस एक ही तड़प एक ही लगन एक ही ख़याल हो कि भागा हुवा मुजरिम अपने आका صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की बारगाहे बेकस पनाह में पेश होने के लिये चला है।

चला हूं एक मुजरिम की तरह मैं जानिबे आका

नज़र शरमिन्दा शरमिन्दा, बदन लरज़ीदा लरज़ीदा

अगर मक्रूह वक़्त न हो और ग़-ल-बए शौक मोहलत दे तो दो दो रक़अत तहिय्यतुल मस्जिद व शुक्रानए बारगाहे अक़दस अदा कीजिये।

अब अ-दबो शौक में डूबे हुए गरदन झुकाए आंखें नीची किये, आंसू बहाते, लरज़ते, कांपते, गुनाहों की नदामत से पसीना पसीना होते, सरकारे नामदार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के फ़ज़्लो करम की उम्मीद रखते आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के क़-दमैने शरीफ़ेन की तरफ़ से सुनहरी जालियों के रू बरू मुवा-जहा शरीफ़ में हाज़िर हों।

अस्ल मुवा-जहा शरीफ़ किस तरफ़ है ?

अब सरापा अदब बने ज़ेरे किन्दील उन चांदी की कीलों के सामने जो सुनहरी जालियों के दरवाज़ए मुबा-रका में ऊपर की तरफ़ जानिबे मशिरक़ लगी हुई हैं किब्ले को पीठ किये कम अज़ कम चार

हाथ (या'नी तक़रीबन दो गज़) दूर नमाज़ की तरह हाथ बांध कर महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के चेहरए अन्वर की तरफ़ रुख़ कर के खड़े हों कि “फ़तावा आलमगीरी” वग़ैरा में येही अदब लिखा है कि صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के दरबार में इस तरह खड़ा हो जिस तरह नमाज़ में खड़ा होता है।” याद रखिये ! सरकारे नामदार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ अपने मज़ारे पुर अन्वार में ऐन हयाते ज़ाहिरी की तरह ज़िन्दा हैं और आप को भी देख रहे हैं बल्कि आप के दिल में जो ख़यालात आ रहे हैं उन पर भी मुत्तलअ या'नी आगाह हैं। ख़बरदार ! जाली मुबारक को बोसा देने या हाथ लगाने से बचिये कि येह ख़िलाफ़े अदब है कि हमारे हाथ इस काबिल ही नहीं कि जाली मुबारक को छू सकें। लिहाज़ा चार हाथ (या'नी तक़रीबन दो गज़) दूर ही रहिये। क्या येह कम शरफ़ है कि अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के प्यारे हबीब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने आप को अपने मुवा-ज-हए अक्दस के करीब बुलाया और यकीनन रहमते आलम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ की निगाहे करम अब खुसूसियत के साथ आप की तरफ़ है।

दीदार के काबिल तो कहां मेरी नज़र है

येह तेरी इनायत है कि रुख़ तेरा इधर है

सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की ख़िदमत में सलाम अर्ज़ करने का तरीका

अब अ-दबो शौक़ के साथ दर्द भरी मो'तदिल (या'नी दरमियानी)

आवाज़ में इन अल्फ़ाज़ के साथ सलाम अर्ज़ कीजिये :

السَّلَامُ عَلَيْكَ أَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللَّهِ وَبَرَكَاتُهُ، السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ،
السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا خَيْرَ خَلْقِ اللَّهِ، السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا شَفِيعَ الْمُذْنِبِينَ، السَّلَامُ
عَلَيْكَ وَعَلَىٰ آلِكَ وَأَصْحَابِكَ وَأُمَّتِكَ أَجْمَعِينَ۔

सिद्दीके अक्बर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की खिदमत में सलाम

फिर मशिरक की जानिब (या'नी अपने सीधे हाथ की तरफ) आधे गज के करीब हट कर (करीबी छोटे सूराख की तरफ) हज़रते सय्यिदुना सिद्दीके अक्बर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के चेहरए अन्वर के सामने दस्त बस्ता खड़े हो कर यूँ सलाम अर्ज कीजिये :

السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا خَلِيفَةَ رَسُولِ اللَّهِ السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَزِيرَ رَسُولِ اللَّهِ السَّلَامُ عَلَيْكَ
يَا صَاحِبَ رَسُولِ اللَّهِ فِي الْغَارِ وَرَحْمَةَ اللَّهِ وَبَرَكَاتَهُ۔

फ़ारूके आ'जम رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की खिदमत में सलाम

फिर इतना ही जानिबे मशिरक मज़ीद सरक कर हज़रते सय्यिदुना फ़ारूके आ'जम رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के रू बरू अर्ज कीजिये :

السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ، السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مَتَمَّ الْأَرْبَعِينَ، السَّلَامُ
عَلَيْكَ يَا عِزَّ الْإِسْلَامِ وَالْمُسْلِمِينَ وَرَحْمَةَ اللَّهِ وَبَرَكَاتَهُ ط

दोबारा एक साथ शैख़ैन की खिदमत में सलाम

फिर बालिशत भर जानिबे मगरिब या'नी अपने उल्टे हाथ की तरफ सरक जाइये और दोनों छोटे सूराखों के दरमियान खड़े हो कर एक साथ सिद्दीके अक्बर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ और फ़ारूके आ'जम رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की खिदमत में इस तरह सलाम अर्ज कीजिये :-

السَّلَامُ عَلَيْكُمَا يَا خَلِيفَتَي رَسُولِ اللَّهِ ط السَّلَامُ عَلَيْكُمَا يَا وَزِيرَي رَسُولِ
اللَّهِ ط السَّلَامُ عَلَيْكُمَا يَا صُحْبَتَي رَسُولِ اللَّهِ وَرَحْمَةَ اللَّهِ وَبَرَكَاتَهُ ط أَسْأَلُكُمَا
الشفاعة عند رسول الله صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَعَلَيْكُمَا وَبَارَكَ وَسَلَّمَ ط

येह तमाम हाज़िरियां कबूलिय्यते दुआ के मकामात हैं ।

दुआ के लिये जाली मुबारक को पीठ न कीजिये

जब जब सुनहरी जालियों के पास हाजिरी नसीब हो इधर उधर हरगिज़ न देखिये और खास कर जाली शरीफ़ के अन्दर देखना तो बहुत ही जुरअत है, क़िब्ले की तरफ़ पीठ किये कम अज़ कम चार हाथ जाली मुबारक से दूर खड़े रहिये और मुवा-जहा शरीफ़ की तरफ़ रुख़ कर के सलाम अर्ज़ कीजिये। दुआ सुनहरी जालियों की तरफ़ रुख़ कर के ही मांगिये कहीं ऐसा न हो कि आप का'बे को मुंह कर लें और का'बे के का'बे को पीठ हो जाए।

म-दनी इल्लिजा : दौराने तवाफ़ बल्कि मस्जिदैनै करीमैन में अपने मोबाइल फ़ोन बन्द रखिये। **मस्अला :** फ़ोन की म्यूज़ीकल ट्यून मस्जिद के बाहर भी ना जाइज़ व गुनाह है इस से हमेशा के लिये तौबा कर लीजिये।

महक्ता म-दनी फूल : हज्जे मबरूर (या'नी मक्बूल हज) की निशानी ही येह है कि पहले से बेहतर हो कर पलटे।

(फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 24, स. 467)

काबिले तवज्जोह

जिस पर हज फ़र्ज़ हो गया उस पर और जो नफ़ली हज करने जाए उस पर भी फ़र्ज़ है कि वोह हज के ज़रूरी मसाइल जानता हो। येह चन्द वरकी रिसाला सिर्फ़ "इशारात" पर मन्बी और क़तअन ना मुकम्मल है, जिन्हों ने हज के तफ़सीली अहकाम सीख लिये हैं सिर्फ़ उन ही के लिये येह रिसाला कार आमद है, लिहाज़ा हज के अहकाम जानने के लिये "रफ़ीकुल ह-रमैन" का ज़रूर मुता-लआ फ़रमाइये नीज़ ज़रूरत के मसाइल उ-लमाए किराम से मा'लूम करते रहिये।

मदीने पहुंचे तो साथ आया ग़म जुदाई का

हम अशक़बार ही पहुंचे थे अशक़बार चले

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

दा 'वते इस्लामी की झल्कियां

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज्जहुन अनिल उयूब
صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ फ़रमाते हैं : “जो मुझ पर एक बार दुरूद भेजे
 अल्लाह तअ़ाला उस पर दस बार रहमत नाज़िल फ़रमाएगा।”

(مسلم ص ٦١٢، الحديث ٨٠٢)

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ عَلَى مُحَمَّدٍ

ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मुस्तफ़ा जाने रहमत, शम्ए
 बज्मे हिदायत, नोशए बज्मे जन्नत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने
 जन्नत निशान है : “जिस ने मेरी सुन्नत से महब्वत की उस ने मुझ से
 महब्वत की और जिस ने मुझ से महब्वत की वोह जन्नत में मेरे साथ
 होगा।”

(تاريخ دمشق، ج ٩ ص ٣٢٣ دار الفكر بيروت)

हुजूरे अक्दस صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया :

”مَنْ تَمَسَّكَ بِسُنَّتِي عِنْدَ فَسَادِ أُمَّتِي فَلَهُ أَجْرُ مِائَةِ شَهِيدٍ“ (مشکوٰةالصّٰیغ، ج ١، ص ٥٥ حديث ١٤٦)
 या'नी जिस ने मेरी उम्मत के बिगड़ते वक़्त मेरी सुन्नत को मज्बूत थामा तो उसे
 100 शहीदों का सवाब मिलेगा।” मुफ़स्सिरे शहीर हक्कीमुल उम्मत
 हज़रते मुफ़ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّانِ इस हदीस के तहत फ़रमाते
 हैं : “शहीद तो एक बार तलवार का ज़ख़म खा कर पार हो जाता है मगर
 येह अल्लाह का बन्दा उम्र भर लोगों के ता'ने और ज़बानों के घाव खाता
 रहता है। अल्लाह और रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की ख़ातिर
 सब कुछ बरदाश्त करता है और इस का जिहाद जिहादे अक्बर है जैसे इस
 ज़माने में दाढ़ी रखना, सूद से बचना वगैरा।”

(میرآات، ج. 1، س. 173)

दा 'वते इस्लामी की ज़रूरत

पारह 4 सूरए आले इमरान आयत नम्बर 104 में अल्लाहु रहमान عَزَّ وَجَلَّ
 का फ़रमाने हिदायत निशान है :

وَلْتَكُنْ مِنْكُمْ أُمَّةٌ يَدْعُونَ إِلَى الْخَيْرِ
وَيَأْمُرُونَ بِالْبَعْرِوفِ وَيَهْتَدُونَ عَنِ
السُّنْكِرِ وَأُولَئِكَ هُمُ السُّفْلِحُونَ ﴿١٠٢﴾
(پ ۴، ال عمران: ۱۰۲)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : और तुम
में एक गुरौह ऐसा होना चाहिये कि भलाई
की तरफ बुलाएं और अच्छी बात का
हुक्म दें और बुरी से मन्अ करें और येही
लोग मुराद के पहुंचे ।

इस आयते मुकद्दसा की तफ्सीर बयान करते हुए मुफ़्फ़िसरे शहीर
हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَانِ तफ़्सीरे
नईमी जिल्द 4 सफ़हा 72 पर फ़रमाते हैं : “ऐ मुसल्मानो ! तुम सब को
ऐसी जमाअत होना चाहिये या ऐसी जमाअत बनो या ऐसी जमाअत बन
कर रहो जो तमाम टेढ़े लोगों को ख़ैर (या'नी भलाई) की दा'वत दे,
काफ़िरों को ईमान की, फ़ासिकों को तक्वे की, गाफ़िलों को बेदारी की,
जाहिलों को इल्म व मा'रिफ़त की, खुश्क मिज़ाजों को लज़्ज़ते इश्क की,
सोने वालों को बेदारी की और अच्छी बातों, अच्छे अक़ीदों, अच्छे
अ-मलों का ज़बानी, क-लमी, अ-मली, कुव्वत से, नरमी से (और
हाकिम अपने महकूम को) गरमी से हुक्म दे, और बुरी बातों, बुरे अक़ीदे,
बुरे कामों, बुरे ख़यालात से लोगों को ज़बान, दिल, अमल, क़लम, तलवार
से (अपने अपने मन्सब के मुताबिक) रोके ।” (तफ़्सीरे नईमी, जि. 4, स. 72)

छोटे बड़े सभी मुबल्लिग़ हैं

मुफ़्ती साहिब عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى मज़ीद फ़रमाते हैं : “सारे
मुसल्मान मुबल्लिग़ हैं, सब पर ही फ़र्ज है कि लोगों को अच्छी बातों
का हुक्म दें और बुरी बातों से रोके ।” मतलब येह कि जो शख़्स जितना
जानता है उतना दूसरे इस्लामी भाइयों तक पहुंचाए जिस की ताईद में
मुफ़्फ़िसरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान
عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى हदीसे पाक नक़ल करते हैं : هُجْرُ تَاجِدَارِ مَدِينَا
مِيرِي تَرَفِّ سِي وَلَوْ آيَةٌ : صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

दो अगर्चे एक ही आयत हो ।”

(صَحِيحُ الْبُخَارِيِّ ج ٢ ص ٢٦٢، حديث ٣٢٦١)

दुआएं क़बूल नहीं होंगी

हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा बिन यमान رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ बयान करते हैं कि नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इर्शाद फ़रमाया : “उस ज़ात की क़सम ! जिस के क़ब्ज़ए कुदरत में मेरी जान है तुम ज़रूर नेकी का हुक्म देते रहना और बुराई से रोकते रहना वरना अन्क़रीब अल्लाह तअ़ाला तुम पर अज़ाब भेज देगा । फिर तुम दुआ़ा करोगे तो तुम्हारी दुआ़ा क़बूल न होगी ।” (جامع الترمذی، کتاب الفتن، باب مَا جَاءَ فِي الْأَمْرِ بِالْمَعْرُوفِ..... الخ ج ٢ ص ١٩ حديث ٢١٤٦)

अज़ाबे इलाही की वर्इद

हज़रते सय्यिदुना जरीर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ बयान करते हैं कि मैं ने प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को येह फ़रमाते सुना : “जिस क़ौम में गुनाहों के काम किये जा रहे हों और वोह उन गुनाहों को मिटाने की कुदरत रखते हों और फिर भी न मिटाएं तो अल्लाह तअ़ाला उन को मरने से पहले अज़ाब में मुब्तला कर देगा ।” (سنن ابی داؤد کتاب الملاحم ج ٤ ص ١٦٤ حديث ٤٢٣٩)

दा'वते इस्लामी का आगाज़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाहु रहीम عَزَّ وَجَلَّ ने उम्मेते महबूबे करीम عَلِيٍّ صَاحِبِهَا الصَّلَاةُ وَالسَّلَامِ को हर दौर में ऐसी नाबिगए रूज़गार हस्तियां अत्ता फ़रमाईं जिन्हों ने न सिर्फ़ खुद (يَا'नी नेकी का हुक्म देने और बुराई से मन्अ करने) का मुक़द्दस फ़रीज़ा ब तरीक़े अहूसन अन्जाम दिया बल्कि मुसल्मानों को अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश करने का ज़ेहन दिया । उन्हीं में एक हस्ती शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरि

र-जवी **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ** भी हैं जिन्होंने ने 1401 सि. हि. ब मुताबिक 1981 ई. में बाबुल मदीना (कराची) में तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी तहरीक “**दा'वते इस्लामी**” के म-दनी काम का आगाज़ अपने चन्द रु-फ़का के साथ किया। आप **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ** ख़ौफ़े खुदा व इश्के मुस्तफ़ा, ज़ब्बए इत्तिबाए कुरआनो सुन्नत, ज़ब्बए एहयाए सुन्नत, ज़ोहदो तक्वा, अफ़वो दर गुज़र, सब्र व शुक्र, अज़िज़ी व इन्किसारी, सा-दगी, इख़्लास, हुस्ने अख़्लाक़, दुन्या से बे रग़बती, हिफ़ाज़ते ईमान की फ़िक्र, फ़रोगे इल्मे दीन, ख़ैर ख़्वाहिये मुस्लिमीन जैसी सिफ़ात में यादगारे अस्लाफ़ हैं। आप **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ** ने इस म-दनी तहरीक “**दा'वते इस्लामी**” के ज़रीए **लाखों** मुसल्मानों बिल खुसूस नौ जवान इस्लामी भाइयों और बहनों की जिन्दगियों में **म-दनी इन्क़िलाब** बरपा कर दिया, कई बिगड़े हुए नौ जवान तौबा कर के राहे रास्त पर आ गए, बे नमाज़ी न सिर्फ़ **नमाज़ी** बल्कि नमाज़ें पढ़ाने वाले (या'नी इमामे मस्जिद) बन गए, मां बाप से ना ज़ैबा रवय्या इख़्तियार करने वाले बा अदब हो गए, कुफ़्र के अंधेरो में भटकने वालों को नूरे इस्लाम नसीब हुवा, यूरोपी ममालिक की रंगीनियों को देखने के ख़्वाहिश मन्द **का'बए मुशर्रफ़ा** व **गुम्बदे ख़ज़रा** की ज़ियारत के लिये **बे क़रार** रहने लगे, दुन्या के बे जा ग़मों में घुलने वाले फ़िक्रे आख़िरत की म-दनी सोच के **हामिल** बन गए, फ़ोह़श रसाइल और फूहड़ डाइजस्टों के शाइकीन उ-लमाए अहले सुन्नत **فِيُوضُهُم** के रसाइल और दीगर दीनी कुतुब का मुता-लअ़ा करने लगे, तफ़रीह की खातिर सफ़र के अ़ादी म-दनी क़ाफ़िलों में **अ़ाशिक़ाने रसूल** के हमराह राहे खुदा में सफ़र करने वाले बन गए और महज़ दुन्या की दौलत इक़्ठी करने को मक्सदे हयात समझने वालों ने इस म-दनी मक्सद को अपना लिया कि “**मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश करनी है।**” **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ**

- (1) **150 मुमालिक** : الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّ وَجَلَّ तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी तहरीक “दा’वते इस्लामी” ता दमे तहरीर दुन्या के तक्रीबन 150 मुमालिक में अपना पैग़ाम पहुंचा चुकी है और आगे कूच जारी है।
- (2) **गैर मुस्लिमों में तब्लीग** : लाखों बे अमल मुसल्मान, नमाज़ी और सुन्नतों के आदी बन चुके हैं। **मुख्तलिफ़ मुमालिक में गैर मुस्लिम** भी मुबल्लिगीने दा’वते इस्लामी के हाथों **मुशरफ़ ब इस्लाम** होते रहते हैं।
- (3) **म-दनी काफ़िले** : “आशिक़ाने रसूल” के सुन्नतों की तरबियत के बे शुमार **म-दनी काफ़िले** मुल्क ब मुल्क शहर ब शहर और क़रिया ब क़रिया सफ़र कर के इल्मे दीन और सुन्नतों की बहारें लुटा रहे और **नेकी की दा’वत** की धूमें मचा रहे हैं।
- (4) **म-दनी तरबियत गाहें** : मु-तअद्दिद मक़ामात पर तरबियत गाहें काइम हैं जिन में दूर व नज़्दीक से इस्लामी भाई आ कर क़ियाम करते, **आशिक़ाने रसूल** की सोहबत में सुन्नतों की तरबियत पाते और फिर कुर्बो जवार में जा कर “नेकी की दा’वत” के **म-दनी फूल** महकाते हैं।
- (5) **मसाजिद की ता’मीर** : के लिये “मजलिसे खुद्दामुल मसाजिद” काइम है, मुल्क व बैरूने मुल्क मु-तअद्दिद **मसाजिद की ता’मीरात** का हर वक़्त सिल्लिसला रहता है, कई शहरों में म-दनी मराकिज़ बनाम “फ़ैज़ाने मदीना” की ता’मीरात का काम भी जारी है।
- (6) **आइम्मए मसाजिद** : बे शुमार मसाजिद के इमाम व **मुअज़्ज़नीन** और ख़ादिमीन के तक़रुर के साथ साथ मुशा-हरे (तन-ख़्वाहों) की अदाएगी का भी सिल्लिसला है।
- (7) **गूंगे, बहरे और नाबीना** : (खुसूसी इस्लामी भाई) : इन के अन्दर भी **म-दनी काम** हो रहा है और इन के **म-दनी काफ़िले** भी सफ़र करते रहते हैं। नीज़ नाबीना और गूंगे बहरों में “म-दनी काम” बढ़ाने के लिये इशारों की ज़बान सिखाने के लिये उमूमी या’नी नोर्मल

इस्लामी भाइयों में वक्तन फ़ वक्तन 30,30 दिन के कोर्सिज़ बनाम “कुफ़ले मदीना कोर्स” करवाए जाते हैं।

क्रिस्चेन का क़बूले इस्लाम

बाबुल मदीना (कराची) 2007 सि. ई. में राहे खुदा عَزَّوَجَلَّ में सफ़र करने वाले नाबीना इस्लामी भाइयों का एक म-दनी क़ाफ़िला मत्लूबा मस्जिद तक पहुंचने के लिये बस में सुवार हुवा। उस म-दनी क़ाफ़िले में चन्द उमूमी (या'नी अंखियारे) इस्लामी भाई भी शामिल थे। अमीरे क़ाफ़िला ने बराबर बैठे शख़्स पर इन्फ़िरादी कोशिश करते हुए उस का नाम वगैरा मा'लूम किया तो वोह कहने लगा : “मैं क्रिस्चेन हूं, मैं ने मज़हबे इस्लाम का मुता-लआ किया है और इस मज़हब से मु-तअस्सिर भी हूं मगर फ़ी ज़माना मुसल्मानों का बिगड़ा हुवा किरदार मेरे लिये क़बूले इस्लाम की राह में रुकावट है, मगर मैं देख रहा हूं कि आप लोग एक जैसे (सफ़ेद) लिबास में मल्बूस हैं, बस में चढ़े और बुलन्द आवाज़ से सलाम किया और हैरत तो इस बात की है कि आप के साथ नाबीना अश़्खास ने भी सर पर सब्ज़ इमामा और सफ़ेद लिबास को अपना रखा है, इन सब के चेहरों पर दाढ़ी भी है।”

उस की गुफ़्त-गू सुनने के बा'द अमीरे क़ाफ़िला ने उसे मुख्तसर तौर पर “मजलिसे ख़ुसूसी इस्लामी भाई” के बारे में बताया। फिर शैख़े तरीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की दिने इस्लाम के लिये की जाने वाली अज़ीम ख़िदमात का तज़िक़रा किया और दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल का तआरुफ़ भी करवाया। फिर उस से कहा कि “येह नाबीना इस्लामी भाई उन्हीं दुन्या दार मुसल्मानों (जिन्हें देख कर आप इस्लाम क़बूल करने से क़तरा रहे हैं) की इस्लाह के लिये निकले हैं।” येह बात सुन कर वोह इतना मु-तअस्सिर हुवा कि कलिमा पढ़ कर मुसल्मान हो गया।

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

(8) जेलखाने : कैदियों की ता'लीम व तरबिय्यत के लिये जेलखानों में भी म-दनी काम की तरकीब है। कराची सेन्ट्रल जेल में कैदियों को आलिम बनाने के लिये जामिअतुल मदीना का भी सिल्लिसला है। कई डाकू और जराइम पेशा अपराध जेल के अन्दर होने वाले म-दनी कामों से मु-तअस्सर हो कर ताइब होने के बा'द रिहाई पा कर आशिकाने रसूल के साथ म-दनी काफ़िलों के मुसाफ़िर बनने और सुन्नतों भरी जिन्दगी गुज़ारने की सआदत पा रहे हैं, आ-तशीं अस्लिहे के ज़रीए अंधाधुंद गोलियां बरसाने वाले अब सुन्नतों के म-दनी फूल बरसा रहे हैं ! मुबल्लिगीन की इन्फ़िरादी कोशिशों के बाइस कुफ़ार कैदी भी मुशरफ़ ब इस्लाम हो रहे हैं।

म-दनी महबूब की जुल्फ़ों का असीर

दा'वते इस्लामी के वसीअ़ दाइए कार को ब हुस्नो ख़ूबी चलाने के लिये मुख्तलिफ़ मुल्कों और शहरों में मु-तअद्दिद मजालिस बनाई जाती हैं। मिन जुम्ला मजलिसे राबिता बिल उ-लमाए वल मशाइख़ भी है जो कि अक्सर उ-लमाए किराम पर मुश्तमिल है। इस मजालिस के इस्लामी भाई मशहूर दीनी दर्सगाह जामिआ राशिदिया (पीर जो गोठ बाबुल इस्लाम सिन्ध) तशरीफ़ ले गए। बर सबीले तज़िकरा जेलखानों में दा'वते इस्लामी के म-दनी काम की बात चली तो वहां के शैख़ुल हदीस साहिब कुछ इस तरह फ़रमाने लगे, जेलखानों के म-दनी काम की ताबनाक म-दनी कारकदर्गी मैं खुद आप को सुनाता हूं, पीर जो गोठ के नवाह में एक डाकू ने तबाही मचा रखी थी, मैं उस को जानता था, आए दिन पोलीस के साथ उस की आंख मिचोली जारी रहती, कई बार गरिफ़्तार भी हुवा मगर अ-सरो रुसूख़ इस्ति'माल कर के छूट गया। आख़िरश किसी जुर्म की पादाश में बाबुल मदीना कराची की पोलीस के हथ्थे चढ़ गया, सज़ा हुई और जेल में चला गया। सज़ा काट लेने के बा'द

रिहाई मिलने पर मुझे से मिलने आया। मैं पहली नज़र में उस को पहचान न सका क्यूं कि मैं ने इस को दाढ़ी मुन्डा और सर बरहना देखा था मगर अब इस के चेहरे पर मीठे मीठे आका मदीने वाले मुस्तफ़ा **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की महबूबत की निशानी नूरानी दाढ़ी जगमगा रही थी, सर पर सब्ज सब्ज इमामा शरीफ़ का ताज अपनी बहारें लुटा रहा था, पेशानी पर नमाजों का नूर नुमायां नज़र आ रहा था। मेरी हैरत का तिलिस्म तोड़ते हुए वोह बोला, कैद के दौरान जेल के अन्दर **الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّ وَجَلَّ** मुझे दा'वते इस्लामी का म-दनी माहोल मुयस्सर आ गया और अशिकाने रसूल की इन्फ़िरादी कोशिश की ब-र-कत से मैं ने गुनाहों की बेड़ियां काट कर अपने आप को म-दनी महबूब **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की जुल्फ़ों का असीर बना लिया।

रहमतों वाले नबी के गीत जब गाता हूं मैं गुम्बदे ख़ज़रा के नज़्ज़ारो में खो जाता हूं मैं जाऊं तो जाऊं कहां मैं किस का ढूंढूं आसरा लाज वाले लाज रखना तेरा कहलाता हूं मैं

(9) इज्तिमाई ए'तिकाफ़ : दुन्या की बे शुमार मसाजिद में माहे र-मज़ानुल मुबारक के 30 दिन और आख़िरी अ-शरे में इज्तिमाई ए'तिकाफ़ का एहतिमाम किया जाता है। इन में हज़ारहा इस्लामी भाई इल्मे दीन हासिल करते, सुन्नतों की तरबिय्यत पाते हैं। नीज़ कई मो'तकिफ़ीन चांद रात ही से अशिकाने रसूल के साथ सुन्नतों की तरबिय्यत के म-दनी क़ाफ़िलों के मुसाफ़िर बन जाते हैं।

ए'तिकाफ़ की ब-र-कत से सारा ख़ानदान मुसल्मान हो गया

एक इस्लामी भाई के बयान का खुलासा है कि कल्यान (महाराष्ट्र, अल हिन्द) की मेमन मस्जिद में तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी तहरीक, दा'वते इस्लामी की जानिब से र-मज़ानुल मुबारक (1426 सि. हि. ब मुताबिक 2005 ई.) में होने वाले इज्तिमाई ए'तिकाफ़ में एक नौ मुस्लिम ने (जो कि कुछ अर्सा क़ब्ल एक मुबल्लिगे दा'वते इस्लामी के हाथों मुसल्मान हुए थे) ए'तिकाफ़ की सआदत हासिल की। सुन्नतों भरे

बयानात, केसिट इज्तिमाआत और सुन्नतों भरे हल्कों ने उन पर खूब म-दनी रंग चढ़ाया ए'तिकाफ की ब-र-कत से दीन की तब्लीग के अज़ीम जज़्बे का रोशन चराग़ उन के हाथों में आ गया चूंकि उन के घर के दीगर अफ़राद अभी तक कुफ़्र की अंधेरी वादियों में भटक रहे थे चुनान्चे ए'तिकाफ़ से फ़ारिग़ होते ही उन्होंने ने अपने घर वालों पर कोशिश शुरुअ कर दी, दा'वते इस्लामी के मुबल्लिग़ीन को अपने घर बुलवा कर दा'वते इस्लाम पेश करवाई । **الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ** वालिदैन, दो बहनों और एक भाई पर मुशतमिल सारा ख़ानदान मुसल्मान हो गया फिर सिल्लिसलए आलिख्या क़ादिरिख्या र-ज़विख्या में दाख़िल हो कर हज़ूरे ग़ौसे पाक **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الرَّزَّاقِ** का मुरीद बन गया ।

वल्वला दी की तब्लीग़ का पाओगे, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़ फ़ज़ले रब से ज़माने पे छा जाओगे, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(फ़ैज़ाने सुन्नत, बाब : फ़ैज़ाने र-मज़ान, जि. 1, स. 1470)

الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ शैख़े तरीक़त अमीरे अहले सुन्नत हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अन्तार क़ादिरी र-ज़वी **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ** दौरै हाज़िर की वोह यगानए रूज़गार हस्ती हैं कि जिन से श-रफ़े बैअत की ब-र-कत से लाखों मुसल्मान गुनाहों भरी ज़िन्दगी से ताइब हो कर **عَزَّوَجَلَّ** के अहकाम और उस के प्यारे हबीबे लबीब **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की सुन्नतों के मुताबिक़ पुर सुकून ज़िन्दगी बसर कर रहे हैं । ख़ैर ख़्वाहिये मुस्लिम के मुक़द्दस जज़्बे के तहत हमारा म-दनी मश्वरा है कि अगर आप अभी तक किसी जामेए शराइत पीर साहिब से बैअत नहीं हुए तो शैख़े तरीक़त अमीरे अहले सुन्नत **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ** के फुयूज़ो ब-रक़ात से मुस्तफ़ीद होने के लिये इन से बैअत हो जाइये । **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** दुन्या व आख़िरत में काम्याबी व सुख़-रूई नसीब होगी ।

मुरीद बनने का तरीका

अगर आप मुरीद बनना चाहते हैं, तो अपना और जिन को मुरीद या तालिब बनवाना चाहते हैं उन का नाम नीचे तरतीब वार मअ वल्दियत व उम्र लिख कर “मजलिसे मक्तूबातो ता वीजाते अत्तारिय्या, फैजाने मदीना, त्री कोनिया बगीचे के पास, मिरजा पूर, अहमदआबाद, गुजरात।” के पते पर रवाना फ़रमा दें, तो **اِنَّكَ اِلٰهٌ عَزَّوَجَلَّ** उन्हें भी सिल्सिलए कादिरिय्या र-ज़विय्या अत्तारिय्या में दाख़िल कर लिया जाएगा। (पता इंग्रेजी के केपिटल हरूफ़ में लिखें)

E.Mail:Attar@dawateislami.net

(10) हफ़तावार (11) सूबाई और (12) हज के बा'द सब से बड़ा सुन्नतों भरा इज्तिमाअः दुन्या के मुख़्तलिफ़ मुमालिक में हज़ारों मक़ामात पर होने वाले हफ़तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाआत के इलावा आलमी और सूबाई सत्ह पर भी सुन्नतों भरे इज्तिमाआत होते हैं। जिन में हज़ारों, लाखों आशिकाने रसूल शिकत करते हैं और इज्तिमाअ के बा'द खुश नसीब इस्लामी भाई सुन्नतों की तरबिय्यत के म-दनी काफ़िलों के मुसाफ़िर भी बनते हैं। मदीनतुल औलिया मुलतान शरीफ़ (पाकिस्तान) में वाक़ेअ सहराए मदीना के कसीर रक़बे पर हर साल 3 दिन का बैनल अक्वामी सुन्नतों भरा इज्तिमाअ होता है, जिस में दुन्या के कई ममालिक से म-दनी काफ़िले शिकत करते हैं। बिला शुबा येह मुसल्मानों का हज के बा'द सब से बड़ा सुन्नतों भरा इज्तिमाअ होता है।

नशे की आदत छूट गई

नवाब शाह (सिन्ध) के मुक़ीम इस्लामी भाई के बयान का खुलासा है कि दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे बैनल अक्वामी इज्तिमाअ की तय्यारियां जोरो शोर से जारी थीं। मुश्कवार म-दनी माहोल की तरबिय्यत की बदौलत मेरा भी नेकी की दा'वत आम करने का ज़ेह्न था चुनान्चे मैं ने एक नौ जवान को इज्तिमाअ की दा'वत पेश की तो कहने लगे : भाई मैं किसी

वजह से इज्तिमाअ में नहीं जा सकता। मैं ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का नाम लिया और नेक सफ़र और नेक इज्तिमाआत के फ़ज़ाइल बताने शुरूअ कर दिये। रब तआला को उस का भला मक़सूद था। वोह नौ जवान तय्यार हो गया और हम सुन्नतों भरे इज्तिमाअ की बहारें लूटने के लिये इज्तिमाअ में पहुंच गए। कुछ देर तो ठीकठाक चला फिर अचानक उस नौ जवान की हालत ग़ैर होने लगी और उस ने वापसी की ठान ली लेकिन अरिज़ी इलाज और इस्लामी भाइयों की इन्फ़िरादी कोशिश की बदौलत वोह मुत्मइन हो गया। इज्तिमाअ की पुरकैफ़ बहारों में उस नौ जवान ने ख़ूब ख़ूब इक्तिसाबे फ़ैज़ किया और ख़ूब रो रो कर दुआएं मांगी इख़ितामे इज्तिमाअ पर हम घर आ गए। फिर कुछ माह बा'द उस नौ जवान से मुलाक़ात हुई तो उस नौ जवान से हाल अहवाल पूछा, उस ने हैरत अंगेज़ बात बताई कि दर अस्ल मुझे नशे की लत पड़ गई थी बिग़ैर इन्जेक्शन लगाए सुकून नहीं मिलता था, मुंह लगी चीज़ छोड़ना दुश्वार तरीन था, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप का भला करे कि मुझे इज्तिमाअ में ले गए الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ जब से सुन्नतों भरे इज्तिमाअ से वापसी हुई है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम से मुझे नशे की ला'नत से छुटकारा नसीब हो गया है। ना सिर्फ़ सिद्दहत संभल गई बल्कि मेरे और बहुत से बिगड़े काम भी संवर गए हैं।

(13) इस्लामी बहनों में म-दनी इन्क़िलाब : इस्लामी बहनों के भी शर-ई पर्दे के साथ मु-तअद्दिद मक़ामात पर हफ़तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाआत होते हैं। ला ता 'दाद बे अमल इस्लामी बहनें बा अमल, नमाज़ी और म-दनी बुर्क़ाओं की पाबन्द हो चुकी हैं। दुन्या के मुख़्तलिफ़ ममालिक में घरों के अन्दर इन के तक़रीबन रोज़ाना हज़ारों मदारिस बनाम मद्र-सतुल मदीना (बालिगात) भी लगाए जाते हैं, एक अन्दाज़े के मुताबिक़ ता दमे तहरीर पाकिस्तान भर में इस्लामी बहनों के 3268 मद्रसे तक़रीबन रोज़ाना लगते हैं जिन में 40453 इस्लामी बहनें कुरआने पाक, नमाज़ और सुन्नतों की मुफ़्त ता'लीम पातीं और दुआएं

याद करती हैं। الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّ وَجَلَّ। जिम्मादार इस्लामी बहनों की म-दनी तरबियत के लिये मुल्क के मुख्तलिफ़ मक़ामात पर “कुरआनो हदीस कोर्स” और बाबुल मदीना (कराची) में 12 दिन के तरबियती कोर्स और क़ाफ़िला कोर्स की भी तरकीब होती है।

मैं फ़ेशन एबल थी

बाबुल मदीना (कराची) की एक इस्लामी बहन का बयान कुछ यूँ है : दा'वते इस्लामी की ब-र-कतें पाने से क़ब्ल मैं एक फ़ेशन एबल लड़की थी। बाल कटवाना, लम्बे लम्बे नाखून रखना, भंवे बनवाना, जर्क बर्क व चुस्त लिबास पहन कर दुपट्टा गले में लटका कर तफ़रीह गाहों में घूमना फिरना मेरा काम था। गाने सुनने का तो ऐसा शौक़ था कि छोटा सा रेडियो मेरे पास रहता जिसे मैं हर वक़्त ओन रखती। शादियों में ढोलक बजाती, गाने गाती थी। मुझे अपनी ज़िन्दगी बड़ी पुर लुत्फ़ और बा रौनक़ लगती थी मगर नहीं जानती थी कि येह अन्दाज़े ज़िन्दगी क़ब्रो ह़शर में मेरी परेशानी का सबब बन सकता है। बिल आख़िर मुझे ढंग से जीने का सलीक़ा आ गया। येह सलीक़ा मुझे “फ़ैज़ाने मदीना” में होने वाले दा'वते इस्लामी के इस्लामी बहनों के हफ़तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ से मिला। मैं म-दनी माहोल से ऐसी मु-तअस्सिर हुई कि क्या ज़ैली सत्ह का इज्तिमाअ क्या शहर सत्ह का ! हर इज्तिमाअ में शिर्कत को अपना मा'मूल बना लिया। बयान कर्दा गुनाहों से बचने पर इस्तिक़ामत नसीब हो गई। शर-ई पर्दा करने के लिये म-दनी बुरक़अ अपने लिबास का हिस्सा बना लिया। मद्र-सतुल मदीना (लिल बनात) में दाख़िला ले कर तज्वीद से क़ुरआने पाक पढ़ना न सिर्फ़ सीख लिया बल्कि मुअल्लिमा (या'नी दूसरों को सिखाने वाली) बन गई। ता दमे तहरीर दा'वते इस्लामी के ज़ैली सत्ह के सुन्नतों भरे इज्तिमाअ की जिम्मादार हूँ। अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ मुझ रू सियाह को दा'वते इस्लामी के “म-दनी माहोल” में इस्तिक़ामत नसीब फ़रमाए।

अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में

ऐ दा'वते इस्लामी तेरी धूम मची हो

(14) **म-दनी इन्आमात** : इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों और त-लबा को फ़राइज़ व वाजिबात, सुनन व **मुस्तहब्बात** और अख़्लाक़ियात का पाबन्द बनाने और मोहलिकात (या'नी हलाकत में डालने वाले आ'माल) से बचाने के लिये **म-दनी इन्आमात** की सूरत में एक **निज़ामे अमल** दिया गया है। बे शुमार इस्लामी भाई, इस्लामी बहनें और त-लबा “म-दनी इन्आमात” के मुताबिक़ अमल कर के रोज़ाना सोने से क़ब्ल “**फ़िक़्रे मदीना**” या'नी अपने आ'माल का जाएज़ा ले कर जेबी साइज़ रिसाले में दिये गए ख़ाने पुर करते हैं।

म-दनी इन्आमात किस के लिये कितने ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस पुर फ़ितन दौर में आसानी से नेकियां करने और गुनाहों से बचने के तरीक़ए कार पर मुश्तमिल शरीअत व तरीक़त का जामेअ मज्मूआ बनाम “**म-दनी इन्आमात**” ब सूरते सुवालात मुरत्तब किया गया है। इस्लामी भाइयों के लिये **72**, इस्लामी बहनों के लिये **63**, त-ल-बए इल्मे दीन के लिये **92**, दीनी तालिबात के लिये **83**, म-दनी मुन्नो और म-दनी मुन्नियों के लिये **40** जब कि खुसूसी इस्लामी भाइयों (या'नी गूगे बहरों) के लिये **27 म-दनी इन्आमात** हैं।

रोज़ाना फ़िक़्रे मदीना करने का इन्आम

एक इस्लामी भाई की तहरीर का खुलासा है : **الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ** : मुझे म-दनी इन्आमात से प्यार है और रोज़ाना **फ़िक़्रे मदीना** करने का मेरा मा'मूल है। एक बार मैं तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी तहरीक, **दा'वते इस्लामी** के सुन्नतों की तरबियत के म-दनी काफ़िले में **आशिक़ाने रसूल** के साथ सूबए बलूचिस्तान (पाकिस्तान) के सफ़र पर था। इसी दौरान मुझ गुनहगार पर बाबे करम खुल गया। हुवा यूं कि रात को जब सोया तो क़िस्मत अंगड़ाई ले कर जाग उठी, **जनाबे**

रिसालत मआब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ख़्वाब में तशरीफ़ ले आए, अभी जल्वों में गुम था कि लबहाए मुबा-रका को जुम्बिश हुई रहमत के फूल झड़ने लगे, अल्फ़ाज़ कुछ यूं तरतीब पाए : जो म-दनी काफ़िले में रोज़ाना फ़िक्रे मदीना करते हैं मैं उन्हें अपने साथ जन्नत में ले जाऊंगा ।

शुक्रिया क्यूंकर अदा हो आप का या मुस्तफ़ा
कि पड़ोसी ख़ुल्द में अपना बनाया शुक्रिया
صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

(फ़ैज़ाने सुन्नत, बाब : फ़ैज़ाने र-मज़ान, फ़ज़ाइले र-मज़ान शरीफ़, जि. 1, स. 139)

(15) म-दनी मुज़ा-करात : बसा अवक़ात “म-दनी मुज़ा-करात” के इज्तिमाआत का इन्डक़ाद भी होता है जिन में अक़ाइदो अा'माल, शरीअत व तरीक़त, तारीख़ व सीरत, तिबाबत व रूहानिय्यत वगैरा मुख़लिफ़ मौज़ूआत पर पूछे गए सुवालात के जवाबात दिये जाते हैं। (येह जवाबात खुद अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ देते हैं)

(16) हुज्जाज की तरबिय्यत : हज के मौसिमे बहार में हाजी केम्पों में मुबल्लिगीने दा'वते इस्लामी हाजियों की तरबिय्यत करते हैं। हज व ज़ियारते मदीनए मुनव्वरह में रहनुमाई के लिये मदीने के मुसाफ़िरों को मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ हज की किताब “रफ़ीकुल ह-रमैन” भी मुफ़्त पेश की जाती है।

(17) ता'लीमी इदारे : ता'लीमी इदारों म-सलन दीनी मदारिस, स्कूलज़, कोलेजिज़ और यूनीवर्सिटीज़ के असातिज़ा व त-लबा को मीठे मीठे आक़ा मदीने वाले मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की सुन्नतों से रू शनास करवाने के लिये भी म-दनी काम हो रहा है। बे शुमार त-लबा सुन्नतों भरे इज्तिमाआत में शिर्कत करते हैं नीज़ म-दनी काफ़िलों के मुसाफ़िर भी बनते रहते हैं, الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ मु-तअद्दिद दुन्यवी उलूम के दिलदादा बे अमल त-लबा, नमाजी और सुन्नतों के आदी हो गए।

(18) **जामिअतुल मदीना** : मुल्क व बैरूने मुल्क कसीर जामिआत बनाम “जामिअतुल मदीना” काइम है इन के जरीए ला ता’दाद इस्लामी भाइयों को (हस्बे जरूरत कियाम व तआम की सहूलतों के साथ) “दर्से निजामी” (या’नी आलिम कोर्स) और इस्लामी बहनों को “आलिमा कोर्स” की मुफ्त ता’लीम दी जाती है। अहले सुन्नत के मदारिस के मुल्क गीर इदारे तन्जीमुल मदारिस (पाकिस्तान) की जानिब से लिये जाने वाले इम्तिहानात में बरसों से तकरीबन हर साल “दा’वते इस्लामी” के जामिआत के त-लबा और तालिबात पाकिस्तान में **नुमायां काम्याबी** हासिल कर के बसा अवकात अव्वल, दुवुम और सिवुम पोजीशन हासिल करते हैं।

(19) **मद्र-सतुल मदीना** : अन्दरूने व बैरूने मुल्क हिफ़ज़ व नाज़िरा के ला ता’दाद मदारिस बनाम “मद्र-सतुल मदीना” काइम है। पाकिस्तान में ता दमे तहरीर कमो बेश **72** हजार म-दनी मुन्ने और म-दनी मुन्नियों को हिफ़ज़ व नाज़िरा की मुफ्त ता’लीम दी जा रही है।

(20) **मद्र-सतुल मदीना (बालिग़ान)** : इसी तरह मुख़ालिफ़ मसाजिद वगैरा में उमूमन बा’दे नमाज़े इशा हजारहा मद्र-सतुल मदीना की तरकीब होती है जिन में इस्लामी भाई सहीह मख़ारिज से हुरूफ़ की दुरुस्त अदाएगी के साथ कुरआने करीम सीखते और दुआएं याद करते, नमाज़ें वगैरा दुरुस्त करते और सुन्नतों की ता’लीम मुफ्त हासिल करते हैं।

(21) **शिफ़ाख़ाने** : महदूद पैमाने पर शिफ़ाख़ाने भी काइम हैं जहां बीमार त-लबा और म-दनी अमले का **मुफ्त इलाज** किया जाता है, जरूरतन दाख़िल भी करते हैं नीज़ हस्बे जरूरत बड़े अस्पतालों के जरीए भी इलाज की तरकीब बनाई जाती है।

(22) **तख़स्सुस फ़िल फ़िक्ह** : या’नी “मुफ़ती कोर्स” और “तख़स्सुस फ़िल फ़ुनून” का भी सिल्लिसला है जिस में **मु-तअद्दिद उ-लमाए किराम इफ़ता की तरबियत** और मख़सूस इल्मी फ़ुनून की महारत पा रहे हैं।

(23) शरीअत कोर्स व तिजारत कोर्स : जरूरिय्याते दीन से रू शनास करवाने के लिये वक्तन फ वक्तन मुख्तलिफ कोर्सिज करवाए जाते हैं म-सलन अपनी नौइय्यत का मुन्फरिद “शरीअत कोर्स” और “तिजारत कोर्स” वगैरा ।

(24) मजलिसे तहकीकाते शरइय्या : मुसल्मानों को पेश आ-मदा जदीद मसाइल के हल के लिये मजलिसे तहकीकाते शरइय्या मस्रूफे अमल है जो कि दा'वते इस्लामी के मुबल्लिग़ीन उ-लमा व मुफ़ितयाने किराम पर मुशतमिल है ।

(25) दारुल इफ़ता अहले सुन्नत : मुसल्मानों के शर-ई मसाइल के हल के लिये मु-तअद्दिद “दारुल इफ़ता” काइम किये गए हैं जहां दा'वते इस्लामी के मुबल्लिग़ीन मुफ़ितयाने किराम बिल मुशाफ़ा, तहरीरी और मक्तूबात के ज़रीए शर-ई मसाइल का हल पेश कर रहे हैं । अक्सर फ़तावा कम्प्यूटर पर कम्पोज़ कर के दिये जाते हैं ।

(26) इन्टरनेट : इन्टरनेट की वेब साइट www.dawateislami.net के ज़रीए दुन्या भर में इस्लाम का पैग़ाम आम किया जा रहा है ।

(27) हाथों हाथ दारुल इफ़ता अहले सुन्नत : दा'वते इस्लामी की वेब साइट www.dawateislami.net में दारुल इफ़ता अहले सुन्नत पर दुन्या भर के मुसल्मानों की तरफ़ से पूछे जाने वाले मसाइल का हल बताया जाता, कुफ़र के इस्लाम पर ए'तिराज़ात के जवाबात दिये जाते और इन को इस्लाम की दा'वत पेश की जाती है । नीज़ दुन्या भर से किये जाने वाले सुवालात के रात दिन हाथों हाथ फ़ोन पर जवाबात दिये जाते हैं ।

(वोह फ़ोन नम्बर येह है : 0092-21-34940443)

(28,29) मक-त-बतुल मदीना और अल मदीनतुल इल्मिय्या : इन दोनों इदारों के ज़रीए सरकारे आ'ला हज़रत **عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعَالَمِينَ** और दीगर उ-लमाए अहले सुन्नत की किताबें ज़ेवरे तब्अ से आरास्ता हो कर लाखों लाख की ता'दाद में अ़वाम के हाथों में पहुंच कर सुन्नतों के

फूल खिला रही हैं। الْحَمْدُ لِلَّهِ عَلَيْهِ السَّلَامُ दा'वते इस्लामी के अपने प्रेस (Press) भी काइम हैं। नीज़ सुन्नतों भरे बयानात और म-दनी मुज़ा-करात की लाखों केसिटें (ऑडियो, वीडियो) भी दुन्या भर में पहुंचीं और पहुंच रही हैं।

(30) **मजलिसे तफ्तीशे कुतुब व रसाइल** : ग़ैर मोहतात कुतुब छापने के सबब उम्मत मुस्लिमा में फैलने वाली ग़लत फ़हमियों और शर-ई ग़-लतियों के सद्दे बाब के लिये "मजलिसे तफ्तीशे कुतुब व रसाइल" काइम है जो **मुसन्निफ़ीन** व **मुअल्लिफ़ीन** की कुतुब को अकाइद, कुफ़्रिय्यात, अख़्लाकिय्यात, अ-रबी इबारात और फ़िक्ही मसाइल के हवाले से मुला-हज़ा कर के सनद जारी करती है।

(31) **मुख्तलिफ़ कोर्सिज़** : **मुबल्लिगीन** की तरबिय्यत के लिये मुख्तलिफ़ कोर्सिज़ का एहतिमाम किया जाता है म-सलन 41 दिन का म-दनी क़ाफ़िला कोर्स, 63 दिन का तरबिय्यती कोर्स, गूंगे बहरों के लिये 30 दिन का कुफ़ले मदीना कोर्स, इमामत कोर्स और मुदररिस कोर्स। इसी तरह स्कूल व कौलेज और जामिआत के त-लबा के लिये छुट्टियों के दौरान मुख्तलिफ़ कोर्सिज़ कराए जाते हैं म-सलन दौरए सर्फ़ व नह्व, अ-रबी तकल्लुम कोर्स, इल्मे तौकीत कोर्स, कम्प्यूटर कोर्स वगैरहुम।

(32) **ईसाले सवाब** : अपने मर्हूम अज़ीजों के नाम डलवा कर फ़ैज़ाने सुन्नत, नमाज़ के अहक़ाम और दीगर छोटी बड़ी किताबें तक़सीम करने के ख़्वाहिश मन्द इस्लामी भाई मक-त-बतुल मदीना से राबिता करते हैं।

(33) **मक-त-बतुल मदीना के बस्ते** : शादी बियाह व दीगर खुशी व ग़मी के मवाक़ेअ पर अहले ख़ाना की तरफ़ से मुफ़्त किताबें बांटने के लिये मक-त-बतुल मदीना के बस्ते लगाए जाते हैं येह ख़िदमत मक्तबे का म-दनी अमला खुद पेश करता है आप सिर्फ़ राबिता फ़रमाइये।

(34) **मजलिसे तराजिम** : मक-त-बतुल मदीना से उर्दू में शाएअ होने वाले रिसालों के मुख्तलिफ़ ज़बानों म-सलन अ-रबी, फ़ारसी, इंग्रेज़ी,

रशियन, सिन्धी, पश्तो, तमिल, फ्रेन्च, सुवाहीली, डेनिश, जर्मन, हिन्दी, बंगला और गुजराती वगैरा में तराजिम कर के उसे दुन्या के कई ममालिक में भेजने की तरकीब की जाती है।

(35) बैरूने मुल्क इज्तिमाआत : दुन्या के कई ममालिक में दो, दो दिन के सुन्नतों भरे इज्तिमाआत का इन्डकाद किया जाता है जहां हजारों मकामी इस्लामी भाई शिर्कत करते हैं नीज इन इज्तिमाआत की ब-र-कत से वक़तन फ़ वक़तन ग़ैर मुस्लिम, मुशर्रफ़ ब इस्लाम हो जाते हैं। इन इज्तिमाआत से हाथों हाथ म-दनी काफ़िले राहे खुदा عَزَّوَجَلَّ में सफ़र इख़्तियार करते हैं।

(36) तरबिय्यती इज्तिमाआत : मुल्क व बैरूने मुल्क में जिम्मेदारान के 2/3 दिन के “तरबिय्यती इज्तिमाआत” मुन्अक़िद किये जाते हैं जिन में हजारों जिम्मेदारान शिर्कत कर के मज़ीद बेहतर अन्दाज़ में म-दनी काम करने का अज़्म कर के लौटते हैं।

(37) म-दनी चैनल : मुल्क व बैरूने मुल्क इस की बहारें जोबनों पर हैं। कई कुफ़्फ़ार दौलते ईमान से मालामाल हुए, न जाने कितने बे नमाज़ी, नमाज़ी बने, मु-तअद्दिद अफ़राद गुनाहों से ताइब हुए और सुन्नतों भरी जिन्दगी का आगाज़ किया। الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ। येह एक ऐसा 100 फ़ी सदी इस्लामी चैनल है कि इस के ज़रीए घर बैठे अच्छा ख़ासा इल्मे दीन सीखा जा सकता है।

(38) मजलिसे राबिता : अहम दीनी, सियासी, समाजी, खेल और दीगर शो'बाहाए जिन्दगी से तअल्लुक रखने वाली शख़िस्सय्यात को दा'वते इस्लामी का पैग़ाम पहुंचाने के लिये मजलिस मस्रूफ़े अमल रहती है।

(39) मजलिसे मालियात : प्रोफ़ेशनल एकाउन्टन्ट (professional accountant) और जिम्मेदारान की ज़ेरे निगरानी “दा'वते इस्लामी” की आमदन व अख़ाजात की देखभाल के लिये मजलिसे मालियात भी काइम है।